भाद्रपद कृष्ण पक्ष 14, 2083 | dopaharmetro | epaper.dopaharmetro.com | dopaharmetro | वर्ष-10, अंक - 65 | पेज 8, मूल्य 2 रुपए

डाक पंजीयन क्रमांक: म.प्र./4-474/2024-26

भोपाल

10 सितंबर 2026 गुरुवार

आज का मौसम

32.0 अधिकतम

22.2 न्यूनतम

बेबाक खबर हर दोपहर

दोपहर मेट्रो

Page-7

जांच जारी रहने के बावजूद किसकी शह पर पीडब्ल्यूडी के मुखिया बने हुए हैं रामलाल?

प्रभारी प्रमुख अभियंता रामलाल की कुर्सी के लिए रुका 15 अधीक्षण यंत्रियों का प्रमोशन...!

प्र देश के लोक निर्माण विभाग में अधीक्षण यंत्रियों की पदोन्नति का मामला लम्बे समय से अधर में है और अब यह सीधे

दोपहर मेट्रो स्पेशल राजेश सिरोठिया

प्रभारी प्रमुख अभियंता रामलाल वर्मा की कुर्सी से जुड़ता नजर आ रहा है। विभाग में मुख्य अभियंता के 23 पद खाली हैं, जबकि उपलब्ध पदक्रम के मुताबिक मुख्य अभियंता बनने के लिए पात्र अधीक्षण यंत्रियों की संख्या महज 15 है। इसके बावजूद पदोन्नति प्रक्रिया आगे नहीं बढ़ रही है।

विभागीय नियमों के मुताबिक विभागीय अथवा लोकायुक्त जांच लंबित होने की स्थिति में अधिकारी की पदोन्नति नहीं की जा सकती। ऐसे में सवाल यह है कि जब रामलाल वर्मा स्वयं मुख्य अभियंता के पद पर नियमित पदोन्नति के लिए पात्र नहीं हैं, तो उन्हें लोक निर्माण विभाग के सर्वोच्च तकनीकी पद प्रमुख अभियंता का प्रभार किस आधार पर सौंपा गया और अब तक बनाए क्यों रखा गया? इस व्यवस्था का सीधा असर उन अधीक्षण यंत्रियों पर पड़ रहा है जो वरिष्ठता के आधार पर मुख्य अभियंता बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

वरिष्ठता सूची में वर्मा चौथे स्थान पर

1 अप्रैल 2025 की शासन की अधिकृत पदक्रम/ग्रेडेशन सूची इस पूरे मामले की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी है। सूची में अधीक्षण यंत्रियों की वरिष्ठता में एसआर बघेल पहले, केपीएस राणा दूसरे, आशाराम सिंह तीसरे और रामलाल वर्मा चौथे स्थान पर हैं। यही सरकारी सूची रामलाल वर्मा के नाम के सामने उनके खिलाफ दर्ज लोकायुक्त प्रकरण का भी उल्लेख करती है। यानी यह कोई बाद में सामने आया दावा नहीं, बल्कि शासन की अपनी अधिकृत पदक्रम सूची में दर्ज तथ्य है। जब विभाग में मुख्य अभियंता के 23 पद रिक्त हैं और पात्र अधीक्षण यंत्रियों की संख्या 15 है, तब पदोन्नति के लिए पदों की कमी का तर्क भी नहीं बनता। फिर वर्षों से पदोन्नति की प्रतीक्षा कर रहे अधीक्षण यंत्रियों की फाइल आगे क्यों नहीं बढ़ रही है?

विभाग में मुख्य अभियंता के 23 पद रिक्त, फिर भी आगे नहीं बढ़ रही पदोन्नति प्रक्रिया

दो लोकायुक्त प्रकरणों ने बढ़ाए सवाल

रामलाल वर्मा

रामलाल वर्मा से संबंधित एक लोकायुक्त प्रकरण का उल्लेख 1 अप्रैल 2025 की पदक्रम सूची में है। यह मामला सागर के प्रभारी मुख्य अभियंता रहते हुए टीकमगढ़ में कथित तौर पर अधिकार क्षेत्र से बाहर निर्माण कार्यों की स्वीकृतियां दिए जाने से जुड़ा बताया गया है। प्रकरण क्रमांक नि/338/ई/2025-26 है। इस मामले को समाप्त करने की दिशा में लोकायुक्त की कार्रवाई को अदालत ने स्वीकार नहीं किया। लेकिन, पड़ताल में रामलाल वर्मा से जुड़ा एक दूसरा और अलग लोकायुक्त प्रकरण भी सामने आया है। प्रकरण क्रमांक नि/039/ई/2025-25 जबलपुर में एनएचएआई द्वारा निर्मित करीब सात किलोमीटर लंबे ब्रिज के नीचे कराए गए निर्माण कार्यों से संबंधित बताया गया है। आरोप है कि रामलाल वर्मा के जबलपुर परिक्षेत्र के प्रभारी मुख्य अभियंता रहते हुए करोड़ों रुपये के विभिन्न कार्य मौखिक निर्देश पर अनुमोदन के बगैर नियमित निविदा प्रक्रिया के बजाय कोटेशन के आधार पर कराए गए। शिकायत में यह भी आरोप है कि कुछ कार्य मौके पर पूरे नहीं हुए, लेकिन उनका भुगतान कर दिया गया। इस मामले में लोकायुक्त की तकनीकी शाखा के मुख्य अभियंता ने 9 जुलाई 2026 को रामलाल वर्मा को तलब किया था। यह प्रकरण उस टीकमगढ़ वाले मामले से अलग है जिसका उल्लेख शासन की 1 अप्रैल 2025 की पदक्रम सूची में दर्ज है।

एक कुर्सी और 15 अधिकारियों का भविष्य

पूरे घटनाक्रम को एक साथ रखकर देखें तो तस्वीर असहज सवाल खड़े करती है। एक ओर शासन की अधिकृत पदक्रम सूची में रामलाल वर्मा वरिष्ठता में चौथे स्थान पर हैं और उनके नाम के सामने लोकायुक्त प्रकरण दर्ज है। उनकी ष्टक्रको लेकर भी सवाल उठ रहे हैं। तो फिर असली सवाल यही है क्या रामलाल वर्मा को प्रभारी प्रमुख अभियंता की कुर्सी पर बनाए रखने के लिए लोनिवि में अधीक्षण यंत्रियों की पदोन्नति प्रक्रिया को रोका जा रहा है?

क्योंकि जिस दिन पात्र अधीक्षण यंत्रियों को नियमित रूप से मुख्य अभियंता पद पर पदोन्नति मिलेगी, उसी दिन वरिष्ठता का वह क्रम प्रभावी हो जाएगा जिसमें वर्मा का प्रभारी प्रमुख अभियंता तो छोड़िये मुख्य अभियंता के पद पर बने रहना भी मुश्किल होगा।यदि पदोन्नति रोकने के पीछे कोई दूसरा प्रशासनिक कारण है तो शासन उसे सार्वजनिक करे। 23 रिक्त पद, 15 पात्र अधिकारी और 2029 तक प्रभारी प्रमुख अभियंता। इन तीन के बीच छिपा सवाल अब लोक निर्माण विभाग से जवाब मांग रहा है।

बड़ा सवाल...'ए' से 'ए प्लस' कैसे हुई सीआर ?

वर्मा की पदस्थापना को लेकर सबसे गंभीर सवाल उनकी गोपनीय चरित्रावली यानी सीआर से भी जुड़ा है। 1 अप्रैल 2025 की अधिकृत पदक्रम सूची में मार्च 2022 की स्थिति के लिए उनकी सीआर में 'A' श्रेणी दर्ज होने की बात सामने आती है। इसके बावजूद बाद में उन्हें प्रमुख अभियंता का प्रभार सौंपा गया। जबकि उच्च प्रभार के लिए पिछली पाँच सीआर ए प्लस होना चाहिए। इस लिहाज से टी इन्हें सीई का प्रभार भी नहीं मिलना था। यदि प्रमुख अभियंता का प्रभार देने से पहले उनकी पुरानी सीआर में 'A' को 'A+' में बदला गया, तो सवाल है कि यह बदलाव कब, किस स्तर पर और किस सक्षम प्राधिकारी की अनुमति से हुआ? यही वह बिंदु है जहां दस्तावेजों की भूमिका महत्वपूर्ण हो जाती है। यदि 1 अप्रैल 2025 की अधिकृत सूची में मार्च 2022 की प्रविष्टि अब भी 'A' है, तो उसके बाद हुए किसी कथित संशोधन की तारीख और प्रक्रिया सामने आना जरूरी है। विभागीय स्तर पर इस बदलाव में अलग स्याही के इस्तेमाल की चर्चा और फॉरेंसिक जांच की बात भी सामने आई है। इसकी अंतिम पुष्टि संबंधित फॉरेंसिक रिपोर्ट से ही होना मुमकिन है ।

रामलाल वर्मा की पदस्थापनाओं का क्रम भी इस पूरे मामले को महत्वपूर्ण बनाता है। वह लोक निर्माण मंत्री राकेश सिंह के गृह जिले जबलपुर परिक्षेत्र के प्रभारी मुख्य अभियंता रहे। इसके बाद उन्हें रीवा परिक्षेत्र का अतिरिक्त प्रभार भी मिला और अंततः विभाग के प्रभारी प्रमुख अभियंता की जिम्मेदारी दी गई। सवाल यह है को यह सब क्यों और कैसे हुआ? किसके कहने पर हुआ? रामलाल वर्मा का कार्यकाल 31 मार्च 2029 तक बताया गया है। ऐसे में पदोन्नति प्रक्रिया जितनी लंबी खिंचेगी, उतना ही असर उन अधीक्षण यंत्रियों के करियर पर पड़ेगा जो मुख्य अभियंता बनने की प्रतीक्षा कर रहे हैं। इनमें एसआर बघेल, केपीएस राणा, आशाराम सिंह, गोपाल सिंह, सुरेश चंद्र वर्मा, सुरेंद्र राव गोरखड़े, आनंद प्रकाश राणे, बीपी बोरासी, राजेश कांगरा, चंद्रपाल सिंह और केशव सिंह यादव समेत कई अधिकारी शामिल हैं। कुछ अधिकारी बिना पदोन्नति के ही रिटायर भी हो चुके हैं। सवाल यह है कि जब पात्र अधीक्षण यंत्रियों की संख्या 15 है, तब विभाग पदोन्नति की प्रक्रिया को कब तक टालता रहेगा? इसे जानबूझकर क्यों टाला जा रहा है ?

जूनियर एशिया कप हॉकी

भारतीय महिला टीम ने पाकिस्तान को 19-0 से रौंदा

मोकी (चीन)। महिला जूनियर एशिया कप में भारत ने पाकिस्तान को एकतरफा मुकाबले में हरा दिया है। चीन के मोकी में टूर्नामेंट का आयोजन किया जा रहा है। टूर्नामेंट के पहले क्वार्टर फाइनल में भारत और पाकिस्तान की टक्कर हुई। इस मैच को भारत ने 19-0 के बड़े अंतर से अपने नाम किया। यह इस महिला जूनियर एशिया कप में किसी भी टीम की सबसे बड़ी जीत है। इस जीत से टीम सेमीफाइनल में पहुंच गई है।

महिला एशिया कप क्रिकेट

सेमीफाइनल में भारत का मुकाबला बांग्लादेश से आज

दुबई। महिला एशिया कप के पहले सेमीफाइनल में भारत का सामना बांग्लादेश से होगा। मुकाबला दुबई इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में रात 8 बजे से शुरू होगा।भारतीय टीम टूर्नामेंट में अब तक एक भी मैच नहीं हारी है। वहीं, भारत पिछले 8 विमेंस टी-20 इंटरनेशनल में बांग्लादेश के खिलाफ अजेय है। बांग्लादेश ने आखिरी बार 13 जुलाई 2023 को भारत को हराया था।दोनों के बीच अब तक 24 इंटरनेशनल मुकाबले खेले गए हैं, जिनमें भारत ने 21 मैच जीते हैं।

न्यूज विंडो

अबू सलेम की समय से पहले रिहाई की मांग खारिज

मुंबई। सुप्रीम कोर्ट ने 1993 मुंबई सीरियल ब्लास्ट मामले में दोषी गैंगस्टर अबू सलेम की समय से पहले रिहाई की मांग वाली याचिका खारिज कर दी। जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस संदीप मेहता की पीठ ने बॉम्बे हाईकोर्ट के उस फैसले में कोई खामी नहीं पाई, जिसमें सलेम की याचिका खारिज की गई थी। सलेम ने दावा किया था कि जेल में मिली सजा में छूट को जोड़ने के बाद वह 25 साल की सजा पूरी कर चुका है, इसलिए उसे रिहा किया जाना चाहिए।

भतीजे आकाश पर भड़कीं मायावती, पार्टी से निकाला

लखनऊ। बसपा सुप्रीमो मायावती भतीजे आकाश आनंद पर फिर भड़क गई हैं। उन्होंने एक बार फिर उन्हें पार्टी से निकाल दिया है। उन्होंने आकाश की पार्टी में वापसी के लिए उनके ससुर और पूर्व सांसद अशोक सिद्धार्थ के राजनीति से संन्यास की शर्त रखी थी। इसके करीब 17 घंटे बाद अशोक सिद्धार्थ ने राजनीति से संन्यास का ऐलान कर दिया। कहा- संन्यास तो छोटी बात है। बहन जी के लिए जान भी दे सकता हूं। इसके बावजूद मायावती नहीं मानीं और आकाश को बाहर का रास्ता दिखा दिया।

आज का कार्टून

चीफ जस्टिस कोगजे ने ली शपथ

राज्यपाल मंगुभाई पटेल ने मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की उपस्थिति में मध्यप्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधिपति न्यायमूर्ति अल्पेश यशवंत कोगजे को पद और गोपनीयता की शपथ दिलाई। मुख्यमंत्री ने गुलदस्ता भेंट कर चीफ जस्टिस को शुभकामनाएं दीं।

हरीश द्विवेदी भाजपा युवा मोर्चा प्रभारी, लालसिंह को किसान मोर्चा की कमान

नई दिल्ली। भारतीय जनता पार्टी ने आज अपने अलग-अलग मोर्चों के प्रभारियों का ऐलान कर दिया है। हरीश द्विवेदी को युवा मोर्चा और डी. पुरंदेश्वरी को महिला मोर्चे का प्रभारी बनाया गया है। सतीश पूनिया को अनुसूचित जनजाति मोर्चे की कमान दी गई है। संजय भाटिया को अनुसूचित जाति मोर्चा और वैजयंत पांडा को ओबीसी की जिम्मेदारी मिली है। किसान मोर्चे का प्रभार लाल सिंह आर्य को दिया गया है। अल्पसंख्यक मोर्चे की जिम्मेदारी गजेंद्र पटेल को सौंपी गई है।

शर्त... दोनों सदनों में रिपब्लिकंस का बहुमत हो

ट्रंप बोले- मिडटर्म चुनाव जीते तो हर बालिग को 5000 डॉलर देंगे

वाशिंगटन, एजेंसी

अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने कहा कि नवंबर के मिडटर्म चुनाव में अगर रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा और सीनेट, दोनों में बहुमत बरकरार रखती है, तो हर बालिग अमेरिकी को 5000 डॉलर (करीब 4.2 लाख रुपए) दिए जाएंगे।

डलास में रिपब्लिकन कन्वेंशन में ट्रम्प ने कहा, 'अगर रिपब्लिकन पार्टी प्रतिनिधि सभा यानी हाउस ऑफ रिप्रेजेंटेटिव और सीनेट दोनों में जीतते हैं तो आपको 5000 डॉलर मिलेंगे।' उन्होंने इसे 'ट्रम्प डिविडेंड' नाम दिया और कहा कि यह अमेरिका की 'आर्थिक ताकत और सफलता' की वजह से दिया जाएगा। ट्रम्प ने ये भी कहा कि डिविडेंड की रकम अमेरिका में ही खर्च करनी होगी। हालांकि, उन्होंने यह नहीं बताया कि इसके लिए पैसा कहां से आएगा, भुगतान का दायरा क्या होगा और रकम किस तरह बांटी जाएगी। हर बालिग अमेरिकी को 5,000 डॉलर देने की योजना पर सरकार को 1 ट्रिलियन डॉलर से ज्यादा खर्च करना पड़ेगा। इसे लागू करने के लिए कांग्रेस की मंजूरी जरूरी होगी।

मेट्रो एंकर

बचपन से ही था सेना की वर्दी पहनने का सपना , छोड़ दिया कॉर्पोरेट जगत का करियर

रीढ़ के फ्रैक्चर से भी नहीं टूटा हौसला, सेना में अफसर बनीं शिवानी

सतना/समस्तीपुर। एजेंसी

'मेरी बेटी एक दिन सेना में अधिकारी बनेगी' ... यह महज एक मां की ख्वाहिश नहीं थी, बल्कि एक ऐसा सपना था जिसे उन्होंने अपनी बेटी की रगों में इस कदर भर दिया था कि कोई भी असफलता या शारीरिक दर्द उसे डिगा नहीं सका। यह कहानी है समस्तीपुर (बिहार) की मूल निवासी और मध्य प्रदेश के सतना में पली-बढ़ीं शिवानी झा की। उन्होंने कॉर्पोरेट जगत के आकर्षक करियर को छोड़ दिया। फिर रीढ़ की हड्डी में गंभीर चोट और लगातार कई असफलताओं को पछाड़ते हुए भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट बनने का अपना सपना पूरा किया।

शिवानी ने ग्वालियर से बीटेक की पढ़ाई पूरी करने के बाद इन्फोसिस और चेकमार्क्स जैसी जानी-मानी साइबर सुरक्षा कंपनियों में एक सफल सॉफ्टवेयर इंजीनियर के रूप में काम किया। उन्हें एक आरामदायक जिंदगी और अच्छी सैलरी मिल रही थी। हालांकि, कॉरपोरेट दुनिया की स्थिरता कभी भी शिवानी का अंतिम लक्ष्य नहीं थी। वे बचपन से ही सेना की वर्दी पहनने का सपना देखती आ रही थीं। उन्होंने अपनी फुल-टाइम नौकरी के साथ-साथ तड़के सुबह और देर रात पढ़ाई करते हुए सर्विस सिलेक्शन बोर्ड (एसएसबी) और सीडीएस परीक्षा की तैयारी जारी रखी। उन्होंने तैयारी के लिए कोई 'ड्रॉप ईयर' या नौकरी से छुट्टी नहीं ली।

सेना में चयन की राह शिवानी के लिए आसान नहीं थी। वायुसेना के एक प्रयास में उन्हें 'मेडिकल डिसक्वालिफिकेशन' का सामना करना पड़ा, जिसके बाद उन्हें अपनी आंखों की सर्जरी करानी पड़ी। एसएसबी के कई प्रयासों में वे शुरुआती स्क्रीनिंग में ही बाहर हो गईं। महामारी के दौरान कोलकाता में मेडिकल टेस्ट के दौरान ऑक्सीजन का स्तर गिर जाने के कारण उन्हें प्रयास बीच में ही छोड़ना पड़ा। इतनी बाधाओं के बावजूद शिवानी ने कभी उम्मीद नहीं छोड़ी। सबसे बड़ी परीक्षा की घड़ी तब आई जब बेंगलुरु में एसएसबी इंटरव्यू के दौरान शिवानी एक बड़े हादसे का शिकार हो गईं। इस दुर्घटना में उनकी रीढ़ की हड्डी की में गंभीर फ्रैक्चर हो गया। डॉक्टरों ने उन्हें पूरी तरह से बिस्तर पर रहने की सलाह दी। जिस चयन प्रक्रिया में कठोर शारीरिक फिटनेस की जरूरत होती है, वहां रीढ़ की हड्डी में फ्रैक्चर किसी के भी हौसले को तोड़ सकता था। शिवानी तीन महीने तक बिस्तर से नहीं उठ सकीं और अगले छह महीनों तक वे हल्का दौड़ने में भी असमर्थ थीं। इस कठिन समय में उनके माता-पिता ने उनकी देखरेख की और कभी भी हार मानने की बात नहीं की। फिजियोथेरेपी के लंबे और दर्दनाक दौर के बाद शिवानी ने धीरे-धीरे खुद को फिर से खड़ा किया।

देश की बेटियों के लिए एक मिसाल

अदम्य इच्छाशक्ति के बल पर ठीक होने के बाद शिवानी ने फिर से परीक्षा दी और अंततः सफलता प्राप्त की। जॉइनिंग लेटर मिलते ही उन्होंने उसी रात अपनी आईटी कंपनी से इस्तीफा दे दिया। सितंबर 2024 में उन्होंने ऑफिसर्स ट्रेनिंग एकेडमी चेन्नई में प्रवेश लिया और एक साल के कठिन सैन्य प्रशिक्षण को सफलतापूर्वक पूरा किया। इसके बाद उन्हें भारतीय सेना में लेफ्टिनेंट के रूप में कमीशन प्रदान किया गया। लेफ्टिनेंट शिवानी झा की कहानी यह साबित करती है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो शारीरिक चोटें और लगातार मिलने वाली असफलताएं भी आपके रास्ते का रोड़ा नहीं बन सकतीं। यह देश की उन तमाम बेटियों के लिए एक मिसाल है जो विपरीत परिस्थितियों के बावजूद बड़े सपने देखने की हिम्मत रखती हैं।

ई-7 की सड़कें खोल रहीं नगर निगम के दावों की पोल, बारिश में बढ़ा हादसों का खतरा

चौंकिए नहीं! यह अरेरा कॉलोनी ही है..लापरवाह निगम के रवैये से हो रहा ऐसा हाल...

भोपाल। राजधानी की पॉश अरेरा कॉलोनी का ई-7 इलाका इन दिनों चमकते मकानों के बीच बदहाल सड़कों की तस्वीर पेश कर रहा है। सड़क पर जगह-जगह गड्ढे और उखड़ी सतह वाहन चालकों के लिए परेशानी का सबब बनी हुई है। हालात ऐसे हैं कि बारिश के दौरान सड़क पर जमा पानी गड्ढों को छिपा देता है और वाहन चालक बिना अंदाजा लगाए उनमें फंस जाते हैं। खासकर दोपहिया वाहन चालकों के लिए यह स्थिति कभी भी हादसे का कारण बन सकती है। रहवासियों का कहना है कि सड़क की बदहाली कोई नई समस्या नहीं है। लंबे समय से मरम्मत कराने की मांग की जा रही है। अधिकारियों को जानकारी भी दी गई है। इसके बाद भी समाधान नहीं हो रहा है।

रात में ज्यादा खतरनाक

नगर निगम के इस लापरवाह रवैये से रात के समय पर्याप्त रोशनी नहीं होने पर गड्ढे और ज्यादा खतरनाक साबित हो रहे हैं। विडंबना यह है कि अरेरा कॉलोनी शहर के प्रमुख और पॉश इलाकों में शामिल है। यहां रोजाना बड़ी संख्या में लोगों की आवाजाही होने के बाद भी निगम के अफसरों की नींद नहीं खुल रही। लोगों का कहना है कि कई बार शिकायत करने के बाद भी समस्या जस की तस पड़ी है।

क्या हादसे का है इंतजार

रहवासियों का कहना है कि यूं तो निगम के जिम्मेदार थोड़ा बहुत मलबा गड्ढे में भरकर गायब हो जाते हैं, लेकिन हल्की बारिश होते ही ये मलबा पानी में बह जाते हैं। लोगों ने बताया कि वर्षों पहले ये सड़कें बनी थीं। अब जर्जर हो चुकी हैं। सड़क के लिए स्थायी समाधान की मांगी है। उनका कहना है कि आखिर कब जागेंगे नगर निगम के अफसर। क्या उन्हें कॉलोनी में किसी हादसे का इंतजार है।

न्यूज विंडो

गोविंदपुरा में शराब पीने से मजदूर की तबीयत बिगड़ी, हो गई मौत

भोपाल। गोविंदपुरा इलाके में रहने वाले एक व्यक्ति की शराब पीने के बाद मौत हो गई। गोविंदपुरा थाना पुलिस ने बताया कि विकास नगर के पास सिक्योरिटी लाइन भेल के खाली क्वाटर में रहने वाले द्वारिका राजपूत (51) मूलतः रायसेन के रहने वाले थे। दस दिन पहले वह नशे की हालत में घर पहुंचे, तभी उनकी तबीयत बिगड़ गई। उनके बेटे दीपक राजपूत ने उन्हें हमिदिया अस्पताल में भर्ती कराया। जहां मंगलवार को उनकी मौत हो गई। पुलिस ने जहरीली शराब पीने की आशंका जताई है।

भेल के ठेकेदार ने गमछे से लगाया फंदा, दे दी जान, पुलिस कर रही जांच

भोपाल। गोविंदपुरा इलाके में रहने वाले भेल के ठेकेदार ने अपने घर में फांसी लगाकर खुदकुशी कर ली। खुदकुशी के कारणों का खुलासा नहीं हो पाया है। फिलहाल पुलिस मामले की जांच कर रही है। थाना पुलिस के मुताबिक श्याम नगर बरखेड़ा पठानी विनोद केशकर (32) भेल में ठेकेदारी करता था और शराब पीने का आदी था। बुधवार शाम गमछे का फंदा बनाकर फांसी लगा ली। पुलिस को जांच में पता चला है कि मृतक की पत्नी तीन साल पहले उसे छोड़कर अपने मायके चली गई थी। पुलिस मामले की जांच की जा रही है।

जेपी अस्पताल ने बल्क वेस्ट जनरेटर के रूप में कराया पंजीयन

भोपाल। ठोस अपशिष्ट प्रबंधन नियम-2026 के पालन को लेकर नगर निगम की कार्रवाई का असर अब बड़े संस्थानों में भी दिखाई देने लगा है। शिवाजी नगर स्थित शासकीय जेपी अस्पताल ने बल्क वेस्ट जनरेटर के रूप में पंजीयन करा लिया। निगम ने कुछ दिन पहले अस्पताल का निरीक्षण किया था। इस दौरान बड़ी मात्रा में जैव चिकित्सा कचरा अन्य कचरे के साथ मिला पाया गया था। इस पर निगम ने अस्पताल की हाउसकीपिंग एजेंसी सेडमेप के खिलाफ चालानी कार्रवाई भी की थी। इसके बाद अस्पताल ने पंजीयन कराया।

गौतम नगर में पुरानी रंजिश में दो पक्षों में झड़प, छुरी से हमला

भोपाल। गौतम नगर में लिस्टेड गुंडे युसूफ ने साथी मोहम्मद समी के साथ मिलकर एक ऑटो चालक आमिर पर छुरी से हमला कर दिया। जवाब में थोड़ी देर बाद आमिर ने भी साथियों गुल्लू और टिल्लू के साथ मिलकर युसूफ व समी से मारपीट कर दी। पुलिस ने एक बदमाश को गिरफ्तार कर लिया है। बाकी की तलाश चल रही है।

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस विशेषः भोपाल में सुसाइड रेट राष्ट्रीय औसत से ज्यादा

शहर में बढ़ रहीं आत्महत्या, मुश्किल में निराश न हों क्योंकि हर जान है कीमती

भोपाल। दोपहर मेट्रो

राजधानी भोपाल में आत्महत्या के बढ़ते मामले चिंता पैदा कर रहे हैं। झीलों की नगरी में मानसिक तनाव और अवसाद की खामोश लहर चल रही है। यह युवाओं को अपनी चपेट में ले रही है। नेशनल क्राइम रिकॉर्ड्स ब्यूरो (एनसीआरबी) के आंकड़े बताते हैं कि भोपाल में आत्महत्या की दर लगभग 28 से 30 व्यक्ति प्रति एक लाख आबादी तक पहुंच गई है। यह आंकड़ा इसलिए डरावना है क्योंकि यह देश के राष्ट्रीय औसत (12.2 से 12.4 व्यक्ति प्रति लाख) से दोगुने से भी अधिक है। शहर में हर साल औसतन 525 से 560 से अधिक लोग आत्मघाती कदम उठाकर अपनी जीवनलीला समाप्त कर रहे हैं। देश के 53 बड़े शहरों की सूची में भोपाल सुसाइड रेट के मामले में ऊपर आ चुका है। यह प्रशासनिक और सामाजिक स्तर पर बड़े खतरे की घंटी है। एम्स भोपाल के शोध भी चौंका रहे हैं। इसके अनुसार शहर में होने वाली कुल आत्महत्याओं में से करीब 79 प्रतिशत मामलों में 19 से 40 वर्ष के हैं। यह समाज का वह हिस्सा है जिसे सबसे ऊर्जावान और कामकाजी माना जाता है। युवाओं में करियर का दबाव, तंगी, अकेलापन, सोशल मीडिया के दौर में बढ़ता मानसिक अलगाव इसका बड़ा कारण है।

यह तस्वीर बदलनी होगी..

आखिर क्यों बढ़ रहे हैं मामले

मनोचिकित्सकों और समाजशास्त्रियों के अनुसार, आत्महत्या के पीछे कोई एक वजह नहीं होती। यह कई परिस्थितियों का मिला-जुला परिणाम है। आंकड़ों का विश्लेषण में मुख्य रूप से तीन बड़े कारण सामने आए हैं।

पारिवारिक कलह और रिश्ते

लगभग 33.5 फीसदी मामलों में पारिवारिक विवाद, आपसी सामंजस्य की कमी और घरेलू तनाव मुख्य वजह बनकर सामने आए हैं।

वैवाहिक -प्रेम प्रसंग विवाद

युवाओं में ब्रेकअप, वैवाहिक अनबन और रिश्तों में अविश्वास के कारण अचानक उपजा आक्रोश भी आत्मघाती कदम की बड़ी वजह बन रहा है।

बीमारियां और मानसिक स्वास्थ्य

लंबे समय से चली आ रही शारीरिक बीमारियां और अवसाद जैसी मानसिक स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को लोग अक्सर नजरअंदाज कर देते हैं, जो बाद में घातक साबित होती हैं।

पूरे प्रदेश की हालत भी बहुत अच्छी नहीं

यह समस्या केवल भोपाल तक सीमित नहीं है। पूरे प्रदेश की बात करें तो विधानसभा में पेश की गई रिपोर्ट के अनुसार, राज्य में हर साल 15,000 से अधिक लोग आत्महत्या करते हैं। यानी प्रदेश में औसतन हर दिन 42 से 44 लोग अपनी जान दे रहे हैं।

याद रखें...हर समस्या का समाधान है, घबराए नहीं

मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि कुछ करने से पहले एक बार सोचें कि ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसका समाधान नहीं है। तनाव या अवसाद में आने पर आपकी समस्या के निदान के लिए सरकार ने हेल्पलाइन की व्यवस्था भी की है।

सिर्फ जागरूकता ही समाधान है...

विशेषज्ञों की मानें तो सामाजिक जागरूकता और 'कम्युनिकेशन' ही एकमात्र समाधान है। इससे आत्महत्याएं रोकी जा सकती हैं। लेकिन इसके लिए हमें अपने आस-पास के लोगों के व्यवहार में आ रहे बदलावों को पहचानना होगा। यदि कोई अचानक शांत हो गया है, खुद को कमरे में बंद रखता है या निराशाजनक बातें करता है, तो उससे तुरंत संवाद बढ़ाना चाहिए। यह संवाद बड़ा कारगर है। इसके साथ ही मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में फैली हिचक को तोड़ना होगा ताकि लोग खुलकर काउंसलर के पास जा सकें। अपनी बातें रख सकें। इससे उनके अंदर का अवसाद सामने आ सकेगा। ऐसे में उन लोगों को समझाया जा सकता है।

जब हो जाएं हताश तो इन नंबरों पर करें कॉल

टेली मानस 14416/1800-89-14416 हेल्पलाइन नंबर केंद्र सरकार की 24 घंटे काम करने वाली मेंटल-हेल्थ सेवा है। यहां काउंसलिंग, मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों से सहायता और जरूरत पड़ने पर आगे की सेवाओं से जोड़ा जाता है। वहीं, मप्र सरकार की जारी हेल्पलाइन 181 पर भी संपर्क कर सकते हैं।

कजलीखेड़ा पुलिस ने जब्त की शराब

शराब लदी स्कॉर्पियो के पीछे पुलिस, भागने के फेर में डिवाइडर पर चढ़ी

भोपाल। दोपहर मेट्रो

सागर में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद अब प्रदेशभर की पुलिस हरकत में आ गई है। इसी कड़ी में राजधानी भोपाल में कजलीखेड़ा पुलिस ने अवैध शराब के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक स्कॉर्पियो कार को पीछा कर पकड़ा है। पुलिस ने गाड़ी की तलाशी ली तो उसमें करीब 40 पेटी शराब मिली। पुलिस ने स्कॉर्पियो और शराब को जब्त कर लिया है। खास यह है कि जब पुलिस स्कॉर्पियो का पीछा कर रही थी तो भागने के प्रयास में ड्राइवर से गाड़ी अनियंत्रित हो गई। स्कॉर्पियो डिवाइडर से टकरा गई, इससे चालक को मामूली चोटे आई हैं।

प्रारंभिक जानकारी के मुताबिक पुलिस को स्कॉर्पियो के जरिए बड़ी मात्रा में शराब ले जाए जाने की सूचना मिली थी। इसके बाद पुलिस ने वाहन को रोकने का प्रयास किया। चालक ने वाहन नहीं रोका तो पुलिस ने उसका पीछा शुरू कर दिया। कुछ दूर पीछा करने के बाद पुलिस ने स्कॉर्पियो को रोककर कब्जे में लिया। पुलिस अब शराब की मात्रा, कीमत और उसे ले जाने के संबंध में जांच कर रही है। वाहन चालक से पूछताछ के साथ यह भी पता लगाया जा रहा है कि इतनी बड़ी मात्रा में शराब कहां ले जाई जा रही थी और इसके पीछे कौन लोग शामिल हैं। पुलिस ने मामले में शराब के अवैध परिवहन को लेकर जांच शुरू कर दी है। जांच के आधार पर आगे की कार्रवाई की जाएगी।

लघुकथा शोध केंद्र समिति की साप्ताहिक गोष्ठी में डॉ. वसुधा गाडगिल की रचनाओं पर मंथन

'घटना से विचार और संवेदना तक ले जाती है लघुकथा'

भोपाल। दोपहर मेट्रो

लघुकथा शोध केंद्र समिति, भोपाल की साप्ताहिक बुधवारीय गूगल गोष्ठी में साहित्यकारों ने लघुकथा के सामाजिक सरोकारों और उसकी प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श किया। कार्यक्रम में बतौर मुख्य समीक्षक वरिष्ठ लघुकथाकार सुनीता प्रकाश ने कहा, 'लघुकथा अपने समय और समाज के साथ कदमताल करते चलती है। यह पाठक को किसी घटना से ही नहीं जोड़ती, घटना से विचार और विचार से संवेदना के शिखर तक ले जाती है। लघुकथा का कथ्य भले ही कोई भी हो, परंतु केंद्र में सदैव मनुष्यता रहती है।' कार्यक्रम का शुभारंभ मुजफ्फर इकबाल सिद्दीकी के स्वागत भाषण से हुआ। संचालन अश्विनी देशपांडे ने किया। आभार डॉ. वसुधा गाडगिल ने माना।

गाडगिल की 5 चुनिंदा लघुकथा ने सभी को मुग्ध कर दिया

सिंहासन पर सेवक: राजनीति के दोहरे चरित्र को बेनकाब करती है।
ममतामयी भविष्य: वृद्धाश्रम की कड़वी सच्चाई और बुजुर्गों की पीड़ा को उजागर करती है।
सच्ची परिक्रमा: नर्मदा के माध्यम से पर्यावरण प्रदूषण की समस्या को सामने लाती है।
सूक्ष्म हिंसा: मानव मन की जटिलताओं और दोहरे व्यवहार को दर्शाती है।
दोहरी हत्या: पर्यावरण चेतना व प्रकृति के प्रति हमारी जवाबदेही पर तीखा प्रहार करती है।

साहित्यकारों की टिप्पणियों से समृद्ध हुआ आयोजन

प्रस्तुत लघुकथाओं पर साहित्य जगत की प्रमुख हस्तियों ने सार्थक टिप्पणियां कीं। अनीता रश्मि, डॉ. आदर्श प्रकाश, डॉ. सरस दरबारी, अरुण दनायक, घनश्याम मैथिल 'अमृत' और कांता रॉय ने रचनाओं के शिल्प, संदेश और सामाजिक सरोकारों की सराहना करते हुए परिचर्चा को नई ऊंचाइयां प्रदान कीं।

तीन दिन बाद पधारेंगे बप्पा

भोपाल। 14 सितंबर को हर घर में बप्पा पधारेंगे। उनके स्वागत के लिए हर कोई बेताब है। लोगों ने घरों के लिए जहां गणपति की प्रतिमाएं खरीदनी शुरू कर दी हैं। वहीं, पूजा समितियों की तैयारियां भी जोरों पर हैं।

नया मीटर के सेटलमेंट को मांग रहा रिश्वत

घूसखोर जेई बोला-आप कौन..मैं DSP लोकायुक्त..और पकड़ा गया इंजीनियर

भोपाल। नया मीटर लगाने और बिजली चोरी के केस में सेटलमेंट के नाम पर रिश्वत का मामला सामने आया है। बिजली कंपनी के जेई अरपित उपाध्याय को लोकायुक्त की टीम ने 15 हजार रुपए की रिश्वत लेते रंगे हाथ गिरफ्तार किया। कार्रवाई डीएसपी वीरेंद्र सिंह के नेतृत्व में की गई। लोकायुक्त टीम ने रिश्वत की रकम भी बरामद कर ली।

कार्रवाई का लाइव वीडियो आया है। इसमें लोकायुक्त टीम के पहुंचने के बाद फरियादी आरोपी जेई की शिनाख्त करता दिखाई-सुनाई दे रहा है। फरियादी टीम को बताता है कि जेई उपाध्याय ने रकम लेकर पिछली जेब में रखी है। वीडियो में जेई लोकायुक्त डीएसपी से पूछता है। आप कौन हैं, आए कैसे हैं?

इस पर डीएसपी वीरेंद्र सिंह कहते हैं- 'मैं डीएसपी लोकायुक्त हूं... आपको रिश्वत के साथ ट्रैप किया है।' अन्य कर्मी राजेंद्र बरवड़े को लोकायुक्त ने दबोचा है। तारीक सिद्दीकी ने नया बिजली मीटर का आवेदन किया था। उससे पुराने बिजली चोरी के प्रकरण में सेटलमेंट कराने और नया मीटर लगवाने के एवज में 20 हजार रुपए मांगे थे।

मेट्रो एंकर | साइबर ठगों का नया पैंतरा, अब बैंक के ऐप का हवाला देकर लोगों से लूट

योनो ऐप अपडेशन के बहाने बुजुर्ग के खाते से उड़ा दिए 1.18 लाख

भोपाल। दोपहर मेट्रो

राजधानी में साइबर जालसाज लगातार नए तरीके अपनाकर लोगों के बैंक खातों तक पहुंच बना रहे हैं। पिछले 24 घंटे में अलग-अलग थाना क्षेत्रों में साइबर ठगी के कई मामले सामने आए हैं। कहीं, बैंकिंग ऐप अपडेट करने का झांसा देकर रकम निकाली गई तो कहीं ऑनलाइन सामान खरीदने, यूपीआई और मोबाइल हैंग होने के बाद खाते से पैसे गायब होने की शिकायत मिली है। एक-दो मामले में कोई लोगों ने न तो ओटीपी दी और न ही जानकारी, फिर भी खाते से रुपए निकल गए। पुलिस ने सभी मामलों में केस दर्ज किया है।

यूपीआई से रकम ट्रांसफर

अरेरा कॉलोनी के अशोक चतुर्वेदी के खाते से 98 हजार रुपए निकाले जाने की शिकायत मिली है। पुलिस ने केस दर्ज किया है।

ऐप अपडेट के नाम पर मांगी बैंक संबंधी जानकारी

स्टेशन बजरिया पुलिस ने द्वारिका नगर निवासी 67 वर्षीय हरिकिशन की शिकायत पर मामला दर्ज किया है। पुलिस के मुताबिक उनके मोबाइल पर एक व्यक्ति ने फोन किया और खुद को बैंक से जुड़ा बता योनो ऐप अपडेट कराने की बात कही। उन्हें लिंक भेजकर एटीएम कार्ड के अंतिम छह अंक, मोबाइल नंबर और एटीएम पिन दर्ज करने को कहा। जानकारी देने के कुछ समय बाद खाते से तीन किस्तों में 1.18 लाख रुपए निकल गए। इसी तरह पिपलानी में निजामुद्दीन कॉलोनी के महमूद सिद्दीकी ने पाइप खरीदने वेबसाइट पर बुकिंग की। जालसाजों ने लोडिंग, पार्सल चार्ज व बिल से जुड़े भुगतान के नाम पर प्रक्रिया कराई, फिर खाते से 31950 रुपए उड़ा लिए।

मोबाइल हो गया हैंग और निकल गए खाते से रुपए

एमपी नगर पुलिस ने अशोका गार्डन निवासी 49 वर्षीय प्रमोद चौरसिया की शिकायत पर मामला दर्ज किया है। प्रमोद एमपी नगर जोन-1 में ठेला लगाते हैं। उसने बताया, अचानक मोबाइल हैंग हो गया था। बाद में बैंक खाते की जानकारी देखने पर पता चला कि खाते से करीब 98 हजार रुपए निकल चुके हैं। कॉल के बाद बैंक खाते से रकम कटने का पता चला।

फाइनेंशियल एडवाइजर को भी लगाया चूना

कोलार में दानिशकुंज निवासी 52 वर्षीय संतोष कुमार सेन एलआईसी में फाइनेंशियल एडवाइजर हैं। उनके मुताबिक रात 12:31 बजे अज्ञात व्यक्ति का फोन आया। उसने बैंक खाते से कई ट्रांजैक्शन किए जाने की बात पूछी। संतोष ने किसी भी तरह का लेन-देन करने से इनकार किया और फोन कट गया। इसके बाद उन्होंने मोबाइल में बैंक के संदेश देखे तो बैंक ऑफ बड़ौदा की टीटी नगर शाखा के खाते से लगातार करीब एक लाख रुपए की रकम निकलने की जानकारी मिली। पुलिस के मुताबिक सभी मामलों की प्रारंभिक जांच भोपाल साइबर क्राइम द्वारा की गई थी। जिन बैंक खातों में ठगी की रकम ट्रांसफर हुई, उन्हें फ्रीज करवाने की कार्रवाई की गई है।

बदहाल व्यवस्था की शर्मनाक तस्वीर, बारिश ने खोली मुरैना के विकास की पोल

कढ़ाई में शव रखकर उफनता नाला पार कराने को मजबूर हुए ग्रामीण

दो हजार से ज्यादा आबादी वाले गांव में आज भी नहीं है श्मशान घाट

मुरैना, दोपहर मेट्रो

विकास के बड़े-बड़े दावों के बीच मुरैना से सामने आई एक तस्वीर ने सरकारी व्यवस्थाओं की पोल खोल दी है। पहाड़गढ़ के भौरूसिंह का पुरा गांव में एक व्यक्ति की मौत के बाद अंतिम यात्रा भी प्रशासनिक बदहाली के आगे बेबस नजर आई। गांव में श्मशान घाट नहीं है और बारिश से उफनते नाले ने रास्ता रोक दिया। ऐसे में परिजनों और ग्रामीणों को शव को लोहे की बड़ी कढ़ाई में रखकर जान जोखिम में डालते हुए नाला पार कराना पड़ा। सवाल सीधा है–जब दो हजार से ज्यादा आबादी वाले गांव में सम्मानजनक अंतिम संस्कार तक की सुविधा नहीं, तो विकास के दावे आखिर किसके लिए हैं? गांव निवासी हुकुम सिंह परमार की मौत के बाद परिजन अंतिम संस्कार के लिए शव को गांव से बाहर ले जाना चाहते थे। लेकिन लगातार बारिश के कारण रास्ते में पड़ने वाला नाला उफान पर था। पानी बढ़ने से सामान्य रास्ता पूरी तरह बाधित हो गया।

ऐसे हालात में ग्रामीणों के सामने शव को दूसरी ओर पहुंचाने की चुनौती खड़ी हो गई। कोई दूसरा सुरक्षित साधन उपलब्ध नहीं होने पर लोहे की बड़ी कढ़ाई का सहारा लिया गया। शव को उसमें रखा गया और कई ग्रामीण उसे संभालते हुए तेज बहाव के बीच नाला पार कराने लगे। इस दौरान जरा सी चूक बड़ा हादसा कर सकती थी।

बुनियादी सुविधाओं पर सवाल | इस घटना ने गांव में बुनियादी सुविधाओं की स्थिति पर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। बताया जाता है कि भौरूसिंह का पुरा गांव की आबादी दो हजार से अधिक है, इसके बावजूद यहां व्यवस्थित श्मशान घाट तक उपलब्ध नहीं है। श्मशान घाट नहीं होने के कारण मृतक का अंतिम संस्कार निजी खेत में करना पड़ा। ग्रामीणों का कहना है कि सामान्य दिनों में भी यह समस्या बनी रहती है, लेकिन बारिश के दौरान स्थिति बेहद गंभीर हो जाती है। नाले का जलस्तर बढ़ते ही गांव से बाहर निकलना मुश्किल हो जाता है और किसी की मौत होने पर अंतिम यात्रा भी संकट में बदल जाती है।

तस्वीरों ने खड़े किए तीखे सवाल

शव को कढ़ाई में रखकर नाला पार कराने का दृश्य अब सामाजिक माध्यमों पर चर्चा का विषय बना हुआ है। तस्वीर और वीडियो सामने आने के बाद लोग सवाल उठा रहे हैं कि जब गांव में अंतिम संस्कार जैसी बुनियादी जरूरत के लिए भी सुरक्षित व्यवस्था नहीं है, तो विकास के दावों की वास्तविक स्थिति क्या है। मामला सामने आने के बाद जिला पंचायत के मुख्य कार्यपालन अधिकारी कमलेश भार्गव ने जांच का भरोसा दिया है। उन्होंने कहा कि यदि ग्राम पंचायत में श्मशान घाट का निर्माण नहीं हुआ है या निर्माण में किसी तरह की अनियमितता सामने आती है तो इसकी जांच कराई जाएगी। उन्होंने दोषी पाए जाने वालों पर सख्त कार्रवाई और जल्द श्मशान घाट निर्माण कराने की बात कही है। अब सवाल यही है कि यह आश्वासन कब जमीन पर उतरता है और भौरूसिंह का पुरा कब ऐसी बुनियादी सुविधा हासिल करता है, जिसके लिए ग्रामीणों को फिर कभी शव लेकर उफनता नाला पार न करना पड़े।

विद्यार्थियों का सर्वांगीण हित हमारी प्राथमिकता

भोपाल। शिक्षा एवं आयुष मंत्री इंदर सिंह परमार की अध्यक्षता मेंमंत्रालय स्थित सभाकक्ष में छतरपुर की शासी निकाय की पंचम बैठक संपन्न हुई। बैठक में महाविद्यालय के शैक्षणिक विकास, विद्यार्थियों के लिए आधुनिक सुविधाओं के विस्तार एवं संस्थान की गुणवत्ता सुदृढ़ करने से संबंधित विभिन्न बिन्दुओं पर चर्चा कर महत्वपूर्ण निर्णय लिए गए। मंत्री श्री परमार ने कहा कि विद्यार्थियों का सर्वांगीण हित हमारी प्राथमिकता है। तकनीकी शिक्षा को गुणवत्तापूर्ण, आधुनिक एवं रोजगारपरक बनाने के लिए संस्थानों में आवश्यक शैक्षणिक संसाधनों और सुविधाओं का निरंतर विस्तार किया जा रहा है। उन्होंने बैठक में लिए गए निर्णयों पर समयबद्ध कार्यवाही सुनिश्चित करने के निर्देश दिए। बैठक में महाविद्यालय की नवीन शाखाओं के लिए पुस्तकों एवं ई-बुक्स के क्रय, इंजीनियरिंग केमिस्ट्री एवं फिजिक्स लैब की स्थापना सहित विभिन्न प्रस्तावों पर चर्चा कर आवश्यक अनुमोदन प्रदान किया गया।

मप्र में गेम डेवलपमेंट की नई प्रतिभाओं को मिलेगा मंच,

भोपाल मध्यप्रदेश में उभरती गेम डेवलपमेंट प्रतिभाओं की पहचान करने और प्रोत्साहित कर उद्योग से जोड़ने के उद्देश्य से 'एमपी गेम उड़ान - मध्यप्रदेश गेम जैम' का आयोजन किया जा रहा है। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विभाग के तहत मध्यप्रदेश राज्य इलेक्ट्रॉनिक्स विकास निगम द्वारा गेम डेवलपर्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया के सहयोग से आयोजित किया जाएगा। इसमें भागीदारी निःशुल्क है। विद्यार्थियों और पहली बार गेम डेवलपमेंट में भाग लेने वाले डेवलपर्स को विशेष रूप से आवेदन के लिए प्रोत्साहित किया जा रहा है। प्रतिभागी इंडी कनेक्ट पर उपलब्ध 'एमपी गेम उड़ान' पेज के माध्यम से पंजीयन कर सकते हैं।

भोपाल, ग्वालियर और इंदौर में 24 से 26 सितंबर तक होगा आयोजन

भोपाल, ग्वालियर और इंदौर में 'एमपी गेम उड़ान' का आयोजन 24 से 26 सितंबर 2026 तक किया जाएगा। इसमें विद्यार्थियों, गेम डेवलपर बनने के इच्छुक युवाओं, प्रोग्रामर्स, कलाकारों, डिजाइनर्स और स्टोरीटेलर्स को एक मंच मिलेगा। प्रदेश के क्रिएटर्स के लिए ऑनलाइन भागीदारी का विकल्प भी उपलब्ध रहेगा। गेम जैम को केवल तीन दिवसीय प्रतियोगिता के रूप में नहीं, बल्कि मध्यप्रदेश में जमीनी स्तर पर मजबूत गेम डेवलपमेंट इकोसिस्टम तैयार करने की दिशा में महत्वपूर्ण पहल के रूप में तैयार किया गया है। इसके माध्यम से प्रतिभाओं, उद्योग विशेषज्ञों, शैक्षणिक संस्थानों और स्थानीय डेवलपर समुदाय को एक साथ लाया जाएगा।

2028 से पहले आदिवासी बेल्ट पर भाजपा की नजर

कांग्रेस के गढ़ में मोहन की दस्तक धार में कल लगेगा जनता दरबार

उमंग सिंघार के गढ़ में मुख्यमंत्री की चुनौती

भोपाल, दोपहर मेट्रो

मध्यप्रदेश में विधानसभा चुनाव भले ही अभी करीब दो साल दूर हों, लेकिन सियासी बिसात अभी से बिछने लगी है। सत्तारूढ़ भाजपा ने चुनावी तैयारियों को रफ्तार देते हुए उन इलाकों पर खास फोकस शुरू कर दिया है, जहां कांग्रेस की मजबूत पकड़ मानी जाती है। आदिवासी बहुल धार इसी रणनीति का सबसे अहम केंद्र बनकर उभर रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव 11 सितंबर को धार में जनता दरबार लगाकर न केवल आम लोगों की समस्याएं सुनेंगे, बल्कि कांग्रेस के मजबूत आधार क्षेत्र में सरकार की सक्रियता का संदेश भी देंगे।

मध्यप्रदेश की राजनीति में आदिवासी मतदाता निर्णायक भूमिका निभाते हैं। धार जिले में इस वर्ग की बड़ी आबादी है और कांग्रेस लंबे समय से यहां मजबूत रही है। ऐसे में मुख्यमंत्री का धार दौरा महज सरकारी कार्यक्रम तक सीमित नहीं माना जा रहा। जनता से सीधा संवाद, किसानों और युवाओं से मुलाकात तथा व्यापारियों और उद्योगपतियों से चर्चा के जरिए सरकार क्षेत्र की नब्ज टटोलने की कोशिश करेगी। धार को कांग्रेस नेता और विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष उमंग सिंघार का प्रभाव क्षेत्र भी माना जाता है। ऐसे में उनके गृह जिले में मुख्यमंत्री का जनता दरबार सियासी तौर पर खास महत्व रखता है। सिंघार भी क्षेत्र में लगातार सक्रिय हैं और गणेश प्रतिमा वितरण जैसे कार्यक्रमों के जरिए अपनी मौजूदगी मजबूत कर रहे हैं। दोनों दलों की बढ़ती सक्रियता से धार आने वाले समय में बड़ा राजनीतिक अखाड़ा बन सकता है।

2023 के नतीजों ने बढ़ा रखी है भाजपा की चिंता

पिछले विधानसभा चुनाव में भाजपा की मजबूत लहर के बावजूद धार में कांग्रेस ने शानदार प्रदर्शन किया था। जिले की सात सीटों में कांग्रेस ने पांच पर जीत दर्ज की, जबकि भाजपा को केवल दो सीटें मिलीं। धरमपुरी में भाजपा की जीत का अंतर महज 356 वोट रहा। सरदारपुर, कुक्षी, गंधवानी, बदनावर और मनावर में कांग्रेस समर्थित उम्मीदवारों ने भाजपा को शिकस्त दी थी। यही नतीजे अब भाजपा के लिए धार को प्राथमिकता देने की बड़ी वजह हैं।

शिकायतों से लेकर उद्योग तक सीधा संवाद

जनता दरबार में मुख्यमंत्री जिला स्तरीय समाधान व्यवस्था के तहत लोगों की शिकायतें सुनेंगे। इसके अलावा औचक निरीक्षण, विभागीय समीक्षा और अधिकारियों के साथ बैठकें भी होंगी। युवा, किसान, व्यापारी और उद्योग जगत के प्रतिनिधियों से संवाद कर मुख्यमंत्री धार की स्थानीय जरूरतों और समस्याओं को समझेंगे। साफ है कि चुनाव दूर जरूर हैं, लेकिन धार में भाजपा और कांग्रेस के बीच सियासी मुकाबले की तैयारी अभी से तेज हो गई है।

विकास के जरिए जमीन मजबूत करने की कोशिश

भाजपा ने चुनावी गणित को ध्यान में रखते हुए धार में सरकारी गतिविधियां भी बढ़ाई हैं। मुख्यमंत्री इससे पहले जिले का दौरा कर चुके हैं और मई 2026 में भोजशाला पहुंचने के दौरान कई विकास कार्यों का शुभारंभ और भूमिपूजन किया था। अब 11 सितंबर का दौरा इसी सिलसिले को आगे बढ़ाता दिखाई दे रहा है।

सरकारी दावों को ठेंगा दिखाते आला अफसर,

मुख्यालय ग्वालियर और जबलपुर में, हाजिरी भोपाल में मनमानी पर मौन शासन

भोपाल का मोह नहीं छोड़ पाते विभाग प्रमुख

भोपाल, दोपहर मेट्रो

चाहे ग्वालियर में आबकारी, परिवहन, भू-अभिलेख एवं बंदोबस्त और राजस्व मंडल का मुख्यालय हो या जबलपुर में पावर जनरेटिंग कंपनी का मुख्यालय, ये केवल नाम के हैं। यहां जिन आयुक्तों की नियुक्ति की गई, उनका मोह भोपाल से नहीं छूट पा रहा है। यही वजह है कि वे मुख्यालय में बैठते ही नहीं हैं।

यह अधिकारी भोपाल में ही बैठ कर मुख्यालय का काम संभालते हैं। दरअसल, प्रशासनिक मुख्यालय इसलिए बनाए गए थे कि विकेंद्रीकृत व्यवस्था हो और अन्य शहरों का भी विकास हो, ताकि एक जगह पावर सेंटर बनकर न रह जाए, लेकिन यह अधिकारी सरकार की इस व्यवस्था पर सवाल खड़े कर रहे हैं।

निधि निवेदिता को प्रमुख राजस्व आयुक्त के साथ आयुक्त भू-अभिलेख एवं बंदोबस्त ग्वालियर का अतिरिक्त प्रभार दिया गया है, लेकिन वह भोपाल से ग्वालियर मुख्यालय का काम कर रही हैं। इसी तरह परिवहन विभाग का मुख्यालय भी ग्वालियर में हैं, उमेश जोगा परिवहन आयुक्त हैं लेकिन वह ग्वालियर में नहीं बैठते।

भोपाल के 11 नंबर में एक कार्यालय बना हुआ है वह यहीं से ग्वालियर का मुख्यालय संभालते हैं।

इंदौर में बैठते हैं आयुक्त

इंदौर में श्रम आयुक्त मुख्यालय है। वाणिज्यिक कर का विभागीय मुख्यालय भी इंदौर में है। मप्र राज्य लोक सेवा आयोग की सचिव शीतला पटले को श्रम आयुक्त इंदौर का अतिरिक्त प्रभार सौंपा गया है। अनय द्विवेदी आयुक्त वाणिज्यिक कर हैं। वह भी इंदौर में ही बैठ रहे हैं, लेकिन अन्य मुख्यालयों में ऐसी स्थिति नहीं है। प्रदेश के विभिन्न शहरों को महत्व देने के लिए राज्य शासन ने सभी कार्यालयों को भोपाल में ही न रखकर अन्य स्थानों पर फैलाया, लेकिन अधिकारियों का मन अपने मुख्यालय में न लगकर भोपाल में ही लगता है। ऐसे में मुख्यालय का नियंत्रण किसी जूनियर अधिकारी को देकर वे भोपाल में रहते हैं।

& यह बहुत अच्छी स्थिति नहीं है। बिना अनुमति मुख्यालय नहीं छोड़ा जा सकता। इसके लिए शासन को विचार करना पड़ेगा कि मुख्यालयों में अधिकारियों का बैठना सख्ती से लागू करें। - **डीएस राय, मप्र के सेवानिवृत्त आईएएस अधिकारी।**

आबकारी आयुक्त दीपक सक्सेना भी बिट्टन मार्केट के पास कैंप ऑफिस से सारा कामकाज करते हैं। राजस्व मंडल अध्यक्ष अनिरुद्ध मुखर्जी हैं, लेकिन वह भी अधिकतर भोपाल में ही बैठते हैं।

उच्च शिक्षा विभाग ने 16 कॉलेजों में कर्मचारियों को दिया प्रमोशन

फार्मासिस्ट ग्रेड-2 के चयनित अभ्यर्थियों ने दी अनिश्चितकालीन हड़ताल की चेतावनी

भोपाल, दोपहर मेट्रो

फार्मासिस्ट ग्रेड-2 भर्ती परीक्षा 2023 में चयनित अभ्यर्थियों ने लंबित नियुक्ति की मांग को लेकर आंदोलन तेज करने की तैयारी शुरू कर दी है। अभ्यर्थियों का कहना है कि पिछले एक सप्ताह से शांतिपूर्ण तरीके से हड़ताल करने के बावजूद शासन और स्वास्थ्य विभाग की ओर से उन्हें कोई ठोस आश्वासन नहीं मिला है। ऐसे में अब अनिश्चितकालीन भूख हड़ताल शुरू करने की तैयारी की जा रही है।

चयनित अभ्यर्थियों की प्रमुख मांग भर्ती परीक्षा 2023 में चयनित सभी

फार्मासिस्ट ग्रेड-2 अभ्यर्थियों को तत्काल नियुक्ति देने की है। उनका कहना है कि जबलपुर और इंदौर हाई कोर्ट द्वारा दिए गए आदेशों का भी पालन किया जाना चाहिए। अभ्यर्थियों ने स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों पर नियुक्ति प्रक्रिया में मनमानी करने का आरोप लगाया है।

कई बार ज्ञापन देने के बाद भी नहीं हुई सुनवाई

अभ्यर्थियों के अनुसार नियुक्ति के संबंध में स्वास्थ्य विभाग के अधिकारियों को कई बार ज्ञापन दिए जा चुके हैं। इसके बावजूद उनकी समस्या का समाधान नहीं किया गया। उनका कहना है कि चयन प्रक्रिया पूरी होने के बाद भी नियुक्ति नहीं मिलने से अभ्यर्थियों में नाराजगी बढ़ रही है। अब उन्होंने लोकतांत्रिक तरीके से आंदोलन जारी रखने का निर्णय लिया है।

इंदौर में राहुल गांधी के 'छात्रों की गूंज' में कांग्रेस का निशान0 प्रतिबंधित

35 साल से ज्यादा उम्र वालों को नहीं मिलेगा प्रवेश

इंदौर, दोपहर मेट्रो

राहुल गांधी के 19 सितंबर को होने वाले आयोजन छात्रों की गूंज में कांग्रेस का चिन्ह और झंडा प्रतिबंधित रहेगा। कांग्रेस के प्रदेश प्रभारी हरीश चौधरी ने बुधवार को इंदौर, राऊ और सांवेर में आयोजन की तैयारियों को लेकर बैठक ली। बैठक में चौधरी ने सभी नेताओं को हिदायत भी दे दी कि कार्यक्रम में 35 साल से ज्यादा उम्र वाले शामिल नहीं होंगे। ऐसे में नेता भी उम्मीद ना रखें कि उन्हें प्रवेश मिलेगा। ना कोई मंच पर रहेगा ना ही राहुल गांधी से किसी तरह की मुलाकात के लिए जद्दोजहद करें।

बीते दिन एक के बाद आयोजन को लेकर कई बैठकें हुई। बैठकों में प्रदेश

अध्यक्ष जीतू पटवारी के साथ शहर अध्यक्ष चिंटू चौकसे, जिला अध्यक्ष विपिन वानखेड़े, उषा नायडू, पूर्व विधायक विजयालक्ष्मी साधौ,इंदौर प्रभारी बाला बच्चन समेत तमाम ब्लाक व जिला अध्यक्ष शामिल रहे।

हरीश चौधरी और जीतू पटवारी ने कहा कि आयोजन पूरी तरह गैर राजनैतिक है। ऐसे में पार्टी के चिन्ह या झंडे का इसमें उपयोग नहीं करें। प्रचार के लिए पदाधिकारी पोस्टर-होर्डिंग लगा रहे हैं तो खुद की तस्वीर नाम दे सकते हैं लेकिन बिना पार्टी के चिन्ह है। इस आयोजन को विद्यार्थियों की मांग और समस्या पर ही केंद्रित रखना है। प्रत्येक विधानसभा क्षेत्र में काम कर रहे प्रभारियों के अलावा अब पूर्व मंत्री विधायकों को भी काम की निगरानी के लिए विशेष प्रभारी बनाया गया है। सांवेर में ग्रामीण कार्यकर्ताओं की बैठक में भी चौधरी ने ब्लाक पदाधिकारियों विक्रम चौधरी, हनी यादव, रफीक अली के साथ ग्रामीण क्षेत्रों के युवाओं की भागीदारी सुनिश्चित करने का लक्ष्य दिया।

डेढ़ लाख पंजीयन

इस बीच छात्रों की गूंज के लिए कुल डेढ़ लाख पंजीयन होने का दावा कांग्रेस ने किया है। बुधवार रात को परदेशीपुरा चौराहे पर कांग्रेस अध्यक्ष चौकसे के साथ कार्यकर्ताओं ने इसका जश्न मनाया। एक दिन पहले ऐसा ही जश्न भंवरकुआं क्षेत्र में कांग्रेसियों ने एक लाख पंजीयन पर मनाया था।इस बीच कांग्रेस नेताओं ने कहा कि अनुमति का इंतजार किए बिना उन्होंने अब रीजनल पार्क के सामने आयोजन की तैयारी शुरू कर दी है।

स्कूलों के विद्युतीकरण को मिली रफ्तार,

प्रदेश के 1,763 स्कूलों में बिजली कनेक्शन देने का कार्य हुआ पूरा

भोपाल, दोपहर मेट्रो

विद्यार्थियों को बेहतर शैक्षणिक वातावरण उपलब्ध कराने के उद्देश्य से मध्यप्रदेश पूर्व क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी द्वारा शासकीय प्राथमिक एवं माध्यमिक विद्यालयों के विद्युतीकरण का कार्य प्राथमिकता के साथ किया जा रहा है। कंपनी के अंतर्गत 24 जिलों के विभिन्न क्षेत्रों में ऐसे विद्यालयों को चिन्हित कर विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराने की कार्यवाही जारी है, जहां अब तक विद्युत सुविधा उपलब्ध नहीं थी। 31 अगस्त 2026 तक की स्थिति के अनुसार राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा चिन्हित 2,752 गैर-विद्युतीकृत विद्यालयों का सर्वेक्षण कंपनी द्वारा पूर्ण किया जा चुका है। सर्वेक्षण में 394 विद्यालयों में पहले से विद्युत कनेक्शन पाए गए, जबकि कुछ विद्यालयों में भवन उपलब्ध नहीं होने अथवा अन्य कारणों से तत्काल कनेक्शन संभव नहीं है। शेष 2,254 विद्यालयों में विद्युत कनेक्शन उपलब्ध कराने की कार्ययोजना तैयार की गई है। इनमें 814 विद्यालय ऐसे हैं, जहां बिना किसी अतिरिक्त विस्तार कार्य के सीधे विद्युत कनेक्शन प्रदान किए जा सकते हैं, जबकि 1,440 विद्यालयों में विद्युत लाइन/नेटवर्क विस्तार की आवश्यकता चिन्हित की गई है। कंपनी द्वारा अब तक कुल 1,763 विद्यालयों में विद्युत कनेक्शन का कार्य पूर्ण कर दिया गया है। इनमें बिना विस्तार कार्य वाले 814 विद्यालय तथा विस्तार कार्य पूर्ण कर 949 विद्यालयों को विद्युत सेवा से जोड़ा जा चुका है।

मेट्रो एंकर | **इंदौर से 9वें राष्ट्रीय पोषण माह का राज्य स्तरीय आगाज**

हमारी आंगनवाड़ी, हमारी जिम्मेदारी' से अभियान को मिलेगी ताकत

भोपाल, दोपहर मेट्रो

प्रदेश में 9वें राष्ट्रीय पोषण माह का राज्य स्तरीय शुभारंभ बुधवार को इंदौर से हुआ। 'हमारी आंगनवाड़ी, हमारी जिम्मेदारी' थीम पर आधारित यह अभियान 8 अक्टूबर तक चलेगा। अभियान के माध्यम से बच्चों, गर्भवती और धात्री महिलाओं के पोषण एवं स्वास्थ्य को लेकर समाज की भागीदारी बढ़ाने पर जोर दिया जाएगा। महिला एवं बाल विकास मंत्री निर्मला भूरिया ने अभियान का शुभारंभ करते हुए कहा कि स्वस्थ बच्चे ही प्रदेश और देश के उज्ज्वल भविष्य की मजबूत नींव हैं। पोषण को केवल सरकारी कार्यक्रम तक सीमित न रखकर इसे समाज की सामूहिक जिम्मेदारी बनाना जरूरी है।

मंत्री भूरिया ने कहा कि आंगनवाड़ी

पोषण मेले में दिखे पौष्टिक व्यंजनों के रंग

लता मंगेशकर सभागृह परिसर में आयोजित पोषण मेला और रेसिपी प्रदर्शनी आकर्षण का केंद्र रही। स्थानीय दालों, चना, मूंगफली, सोया, दूध एवं दुग्ध उत्पादों, मोटे अनाज और मौसमी सब्जियों से तैयार पौष्टिक व्यंजनों का प्रदर्शन किया गया। 'अपने प्रोटीन को पहचानें' अभियान के जरिए संतुलित आहार और स्थानीय प्रोटीन स्रोतों की जानकारी दी गई। अभियान के दौरान 3 से 6 वर्ष के बच्चों को ताजा नाश्ता और गर्म पका भोजन उपलब्ध कराया जाएगा। भोजन की गुणवत्ता, मात्रा और स्वच्छता की निगरानी में समुदाय की भागीदारी सुनिश्चित होगी। आंगनवाड़ी केंद्रों पर साप्ताहिक भोजन सूची भी प्रदर्शित की जाएगी।

केंद्रों को अभिभावकों, सरपंचों, पार्षदों, जनप्रतिनिधियों, स्व-सहायता समूहों और सामाजिक-सांस्कृतिक संस्थाओं से जोड़ा जाएगा। इससे केंद्रों की गतिविधियों को और प्रभावी बनाने में मदद मिलेगी। उन्होंने आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं से स्थानीय जरूरतों के अनुसार नए प्रयोग करने तथा सफल नवाचारों को साझा करने का आह्वान किया।

पोषण माह के दौरान स्थानीय स्तर पर उपलब्ध खाद्य पदार्थों और पारंपरिक व्यंजनों को बढ़ावा दिया जाएगा। गर्भवती और धात्री महिलाओं को पौष्टिक भोजन, स्वच्छता और बच्चों की बेहतर देखभाल के प्रति जागरूक किया जाएगा। कुपोषण की रोकथाम पर भी विशेष ध्यान रहेगा। आंगनवाड़ी भवनों की उपलब्धता बढ़ाने, मिनी आंगनवाड़ियों को मुख्य केंद्रों में उन्नयन करने और कर्मचारियों की लंबित पदोन्नति की प्रक्रिया आगे बढ़ाने के प्रयास भी किए जा रहे हैं।

कार्यक्रम में बच्चों के स्वास्थ्य, पोषण और प्रारंभिक शिक्षा को मजबूत करने के लिए अमेरिकन इंडिया फाउंडेशन, एम्स, आईपीई ग्लोबल और नई दिशा फाउंडेशन के साथ समझौता ज्ञापन किए गए। इनके माध्यम से आंगनवाड़ी केंद्रों की गतिविधियों, बाल स्वास्थ्य, पोषण और प्रारंभिक शिक्षा को बेहतर बनाने पर काम किया जाएगा।

हिमालय की चेतावनी

हिमालय बोलता नहीं, लेकिन उसकी चुप्पी में बहुत कुछ लिखा होता है। कभी पिघलते ग्लेशियरों में, कभी उफनती नदियों में, कभी दरकती पहाड़ियों में और कभी अचानक उजड़ते गांवों में। सवाल यह है कि क्या हम उस चुप्पी को सुन रहे हैं? पिछले छह दशकों में हिमालयी क्षेत्रों की भौगोलिक कठिनाइयों, अलग सामाजिक-सांस्कृतिक पहचान और विकास की जरूरतों को देखते हुए अनेक राज्यों का गठन हुआ। मकसद साफ था-जो क्षेत्र दुर्गमता और उपेक्षा के कारण विकास की मुख्यधारा से पीछे रह गए हैं, उन्हें अपनी प्राथमिकताओं के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर मिले। कुछ राज्यों ने अपनी राह भी बनाई। हिमाचल ने बागवानी को अर्थव्यवस्था की ताकत बनाया, उत्तराखंड ने पर्यटन को विकास का आधार बनाया और पूर्वोत्तर के राज्यों ने भी अपनी अलग पहचान गढ़ने की कोशिश की। लेकिन छह दशक बाद एक असहज सवाल हमारे सामने खड़ा है-क्या हमने हिमालय को विकसित किया या विकास के नाम पर उसे धीरे-धीरे कमजोर किया? सड़कें बनीं, सुरंगें बनीं, होटल बने, बांध बने, शहर पहाड़ों पर चढ़े और पर्यटकों की भीड़ बढ़ती गई। यह सब जरूरी भी था। पहाड़ में रहने वाले नागरिकों को भी वही सुविधाएं मिलनी चाहिए, जो देश के किसी दूसरे हिस्से के नागरिक को मिलती हैं। लेकिन सुविधा और संवेदनहीनता के बीच एक महीन रेखा होती है। हिमालय में उस रेखा को पार करने की कीमत बहुत भारी हो सकती है। आज भूस्खलन, अचानक आने वाली बाढ़, ग्लेशियरों में बदलाव और असामान्य मौसम की घटनाएं बार-बार दस्तक दे रही हैं। हर बार आपदा आती है, कुछ दिनों तक चिंता होती है, बैठकें होती हैं, राहत पहुंचती है और फिर जिंदगी आगे बढ़ जाती है। लेकिन अगली आपदा के सवाल वहीं रह जाते हैं। स्थानीय सरकारों को दोष देना आसान है। उनसे विकास की मांग भी की जाती है और पर्यावरण बचाने की उम्मीद भी। मगर आखिर वे अकेले कितनी दूर तक लड़ें? जब विकास की नीतियां, आर्थिक प्राथमिकताएं और बड़े ढांचागत निर्णय व्यापक स्तर पर तय होते हैं, तो हिमालय की जिम्मेदारी भी केवल पहाड़ी राज्यों की कैसे हो सकती है? हिमालय की रक्षा किसी एक राज्य का विषय नहीं। हिमालय को बचाना पर्यावरण प्रेम का विषय नहीं, जीवन बचाने की शर्त है।

भूदान आंदोलन के 75 साल

जमींदारी उन्मूलन और आचार्य विनोबा भावे का बिहार... भूदान की अधूरी जमीन

कुमार कृष्णन
स्तंभकार

जमीन चुप रहती है, लेकिन उसकी मेड़ पर इतिहास के सबसे बेचैन सवाल लिखे होते हैं। किसी खेत की मिट्टी में पीढ़ियों का श्रम मिला होता है और किसी भूमिहीन के लिए वही मिट्टी जीवन की पहली शर्त होती है। इसलिए 75 वर्ष पहले जब आचार्य विनोबा भावे तेलंगाना के पोचमपल्ली गांव से पैदल निकले थे, तो वे केवल जमीन मांगने नहीं निकले थे। वे मनुष्य के भीतर उस करुणा को जगाने निकले थे, जो संपत्ति को केवल निजी अधिकार नहीं, सामाजिक दायित्व के रूप में देख सके।

18 अप्रैल 1951 को पोचमपल्ली से आरंभ हुई भूदान यात्रा आगे चलकर एक विराट सामाजिक प्रयोग में बदल गई। इसे केवल भूमिहीनों को जमीन दिलाने का अभियान मानना उसके व्यापक अर्थ को सीमित कर देना होगा। इसके पीछे सर्वोदय, ग्राम स्वराज, ट्रस्टीशिप, शांति और मैत्री का वह दर्शन था, जिसमें मनुष्य से कहा जा रहा था कि उसके पास जो कुछ है, उसमें समाज का भी हिस्सा है। इसी भाव से भूदान आगे ग्रामदान तक पहुंचा, 'जय जगत' का मंत्र उभरा, सर्वोदय-पात्र की कल्पना सामने आई और यह आग्रह पैदा हुआ कि जिसके पास जमीन देने को नहीं है, वह कम-से-कम एक मुट्ठी अन्न देकर भी साझी मानवता में अपना योगदान दे।

विनोबा की पदयात्रा ने स्वतंत्रता के बाद गांधी के लाखों अनुयायियों के सामने एक नया रास्ता खोला। गांधी की हत्या के बाद यह बेचैनी थी कि उनके अधूरे स्वप्नों को कौन आगे ले जाएगा। विनोबा ने इस शून्य को किसी राजनीतिक संगठन या सत्ता के सहारे नहीं, बल्कि पैदल चलकर भरा। वे गांव-गांव गए, लोगों से मिले और समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को अपने चिंतन का केंद्र बनाया। इसीलिए भूदान यात्रा का भूगोल जितना व्यापक था, उसका भावलोक उससे भी बड़ा था। चंबल के बीहड़ों में दस्यु सरगनाओं ने हथियार डालकर शांतिपूर्ण जीवन का संकल्प लिया। कोरापुट और असम में ग्रामदान के प्रयोग हुए। असम के वनवासी इलाकों में महिलाओं के नेतृत्व में गांवों के सामूहिक दान का प्रयोग हुआ। चीन के आक्रमण के दौर में भी विनोबा वहां के लोगों के लिए नैतिक साहस का स्रोत बने रहे। राजस्थान के किसी घर में विनोबा के बैठने वाली एक साधारण खाट को परिवार ने इसलिए धरोहर की तरह संभालकर रखा कि उस पर कभी विनोबा बैठे थे। बेंगलुरु में विवेकानंद के बैठने वाली एक साधारण पत्थर की बेंच की तरह ये स्मृतियां बताती हैं कि भारत में महापुरुष केवल इतिहास के पात्र नहीं होते, वे परिवारों की भावनात्मक स्मृति में भी जीवित रहते हैं। विनोबा स्वयं भारत को बुद्ध, महावीर, रामानुज, शंकराचार्य, नानक, कबीर, तुलसी, मीरां, रैदास, चैतन्य, ज्ञानेश्वर, विवेकानंद और गांधी की भूमि के रूप में देखते थे। उनके लिए यह करुणा और आत्मदान की परंपरा वाली धरती थी। इसलिए भूदान जैसा प्रयोग भारत में संभव हुआ। यह विश्वास केवल विनोबा का नहीं था। उस समय के साहित्यकारों और कवियों ने भी इस आंदोलन को अपने शब्दों में अभिव्यक्ति दी। माखनलाल चतुर्वेदी ने विनोबा को संबोधित करते हुए उन्हें अनबोलों की बोली और अकुलाते लोगों की गुहार कहा। राष्ट्रकवि रामधारी सिंह दिनकर ने 'भूमिदान' में भूदान को गांधी के आगे बढ़ते हुए विचार की नई रोशनी के रूप में देखा। दिनकर की कविता में भूमिहीन किसानों की बेचैनी और संपन्न वर्ग के सामने खड़ा नैतिक प्रश्न दोनों उपस्थित हैं। उनके लिए विनोबा का भूदान मांगना किसी दुर्बल की याचना नहीं, बल्कि आने वाली सामाजिक क्रांति को अहिंसक रास्ता देने का प्रयत्न था।

भूदान की इसी दूसरी यात्रा में बिहार का विशेष स्थान बना। बुद्ध की भूमि को विनोबा ने अपने प्रयोग की प्रयोगशाला बनाया और लगभग चार वर्षों तक बिहार में रहे। 1952 में उनके बिहार प्रवेश के साथ आंदोलन ने व्यापक रूप ग्रहण किया। उस समय बिहार भूमि-संबंधी असमानता, जमींदारी उन्मूलन और ग्रामीण तनाव के दौर से गुजर रहा था। जमीन यहां केवल उत्पादन का साधन नहीं थी; वह सामाजिक प्रतिष्ठा, आर्थिक सुरक्षा और राजनीतिक प्रभाव का आधार थी। जिसके पास जमीन थी, उसके पास गांव में शक्ति थी और जिसके पास नहीं थी, उसकी निर्भरता पीढ़ियों तक चलती थी।

विनोबा ने इस असमानता को केवल कानून से हल करने की कोशिश नहीं की। उन्होंने संपन्न लोगों के विवेक को संबोधित किया। उनका आग्रह गांधी की ट्रस्टीशिप की अवधारणा से जुड़ा था—संपत्ति रखिए, लेकिन उसे समाज से अलग मत समझिए। बिहार में श्रीकृष्ण सिंह, अनुग्रह नारायण सिंह, जयप्रकाश नारायण सहित अनेक नेताओं और सर्वोदय कार्यकर्ताओं ने आंदोलन को अलग-अलग स्तर पर समर्थन दिया। गया, दरभंगा, पूर्णिया, सहरसा और दूसरे जिलों में भूदान की गतिविधियां तेज हुईं। बड़े भूमिधरों द्वारा जमीन दान करने की घोषणाएं हुईं। भूदान ने गांवों में जमीन के सवाल की एक नई भाषा पैदा की—ऐसी भाषा जिसमें संघर्ष की जगह संवाद और अधिकार के साथ दायित्व की बात थी। लेकिन भूदान की असली परीक्षा जमीन दान करने की घोषणा के बाद शुरू होती थी। किसी भूमिधर ने जमीन देने का संकल्प किया। दानपत्र बना। रकबा दर्ज हुआ। लेकिन क्या वह जमीन भूमिहीन तक पहुंची? क्या उसका सीमांकन हुआ? क्या राजस्व अभिलेख में नाम चढ़ा? क्या जमीन विवादमुक्त थी? क्या लाभार्थी को वास्तविक कब्जा मिला?

75 साल बाद असली सवाल यह नहीं कि भूदान में कितनी जमीन दान हुई थी। सवाल यह है कि उसमें से कितनी जमीन आज भी न्याय की जमीन बनी हुई है। यदि बिहार इस सवाल का सामना करने का साहस करता है, तो भूदान की विरासत फिर जीवित हो सकती है। तब 75वीं वर्षगांठ अतीत का स्मरण मात्र नहीं होगी, बल्कि उस अधूरे वादे को पूरा करने की शुरुआत होगी। क्योंकि भूदान की अंतिम परीक्षा किसी समारोह, स्मारक या सरकारी फाइल में नहीं है। उसकी परीक्षा उस खेत की मेड़ पर है, जहां एक भूमिहीन परिवार पहली बार यह कह सके—यह जमीन कागज पर ही नहीं, सचमुच मेरी है।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस

आत्महत्या नहीं, संवाद है समाधान, परिवार के साथ समाज की भी बड़ी जिम्मेदारी

योगेश कुमार गोयल
स्तंभकार

विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्ल्यूएचओ) के सहयोग से प्रतिवर्ष 10 सितंबर को दुनियाभर में तेजी से बढ़ती आत्महत्या की प्रवृत्ति पर रोक लगाने के उद्देश्य से 'विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस' मनाया जाता है। इस दिवस की शुरुआत 'इंटरनेशनल एसोसिएशन फॉर सुसाइड प्रिवेंशन' (आईएएसपी) द्वारा 2003 में की गई थी। इन दिन एक पीले रंग के रिबन को प्रतीक के रूप में पहना जाता है, जो इस बात को फैलाने में मदद करने के लिए पहना जाता है कि आत्महत्या की रोकथाम के बारे में बोलने से लोगों की जान बचाई जा सकती है। इस दिवस को मनाने का प्रमुख उद्देश्य आत्महत्या करने वाले व्यक्ति के व्यवहार पर शोध करना, जागरुकता फैलाना और डेटा एकत्रित करना है। दरअसल डब्ल्यूएचओ के मुताबिक दुनिया में हर 40 सैकेंड में एक व्यक्ति आत्महत्या करता है यानी प्रतिवर्ष दुनियाभर में करीब आठ लाख लोग आत्महत्या के जरिये अपनी जीवनलीला खत्म कर डालते हैं, जिनमें से बड़ी संख्या में आत्महत्या के मामले 15 से 29 वर्ष के लोगों में होते हैं जबकि आत्महत्या का प्रयास करने वालों का आंकड़ा इससे बहुत ज्यादा है।

प्रतिवर्ष विश्व आत्महत्या रोकथाम दिवस की एक थीम निर्धारित की जाती है। आत्महत्या रोकथाम दिवस की 2026 की थीम है 'आत्महत्या पर दृष्टिकोण बदलना'। इस थीम का उद्देश्य आत्महत्याओं को रोकने के लिए कलंक को कम करने और खुली बातचीत को प्रोत्साहित करने के महत्व के बारे में जागरूकता बढ़ाना है। लोगों में अवसाद निरन्तर बढ़ रहा है, जिसके चलते ऐसे कुछ व्यक्ति आत्महत्या जैसा हृदयविदारक कदम उठा बैठते हैं। लोगों में जीवन से निराश होकर आत्महत्या की बढ़ती दुष्प्रवृत्ति गंभीर चिंता का सबब बन रही है। डब्ल्यूएचओ के आंकड़ों के अनुसार दुनियाभर में 79 फीसदी आत्महत्या निम्न और मध्यवर्ग वाले देशों के लोग करते हैं और इसमें बड़ी संख्या ऐसे युवाओं की होती है, जिनके कंधों पर किसी भी देश का भविष्य टिका होता है।

हालांकि बीते वर्षों में दुनियाभर में खुदकुशी की घटनाएं तेजी से बढ़ी हैं लेकिन भारत में आत्महत्याओं का आंकड़ा काफी चिंताजनक है। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) ने भारत में आत्महत्या के मामलों को लेकर जारी अपनी रिपोर्ट में बताया है कि वर्ष 2024 में देश में 170746 आत्महत्याएं दर्ज की गई जबकि 2023 में कुल 171418 लोगों ने आत्महत्या की थी। वर्ष 2022 में भारत में आत्महत्या करने वालों की यह संख्या 170924 जबकि 2021 में 164033 थी। एनसीआरबी के मुताबिक आत्महत्या की घटनाओं के पीछे पेशेवर या कैरियर संबंधी समस्याएं, अलगाव की भावना, दुर्व्यवहार, हिंसा, पारिवारिक समस्याएं, मानसिक विकार, शराब की लत, वित्तीय नुकसान, पुराने दर्द इत्यादि मुख्य कारण हैं। आज छात्र अपनी शिक्षा एवं भविष्य को लेकर गहरे असमंजस में हैं। किसी को कैरियर या नौकरी की चिंता सता रही है तो कोई वित्तीय संकट से जूझ रहा है। तनाव के दौर में निजी रिश्तों में भी खटास बढ़ी है और आमजन में नकारात्मक विचारों का बढ़ता प्रवाह तथा उपरोक्त चिंताएं कई बार अवसाद का रूप ले लेती हैं, जिसके चलते कुछ लोग परेशानियों से निजात पाने के लिए आत्महत्या का खतरनाक रास्ता चुन लेते हैं।

जब कोई व्यक्ति लंबे समय तक मानसिक तनाव, निराशा, अकेलेपन, असफलता, पारिवारिक कलह, आर्थिक संकट या किसी गहरे भावनात्मक आघात से जूझता है तो उसकी सोचने-समझने और परिस्थितियों का सामना करने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। ऐसे में अवसाद, निराशा और असहायता की भावना धीरे-धीरे इतनी गहरी हो सकती है कि व्यक्ति को अपने सामने मौजूद समस्याओं से बाहर निकलने का कोई रास्ता दिखाई नहीं देता। यही वह संवेदनशील अवस्था है, जिसमें कुछ लोग आत्महत्या के विचारों से घिर सकते हैं। आत्महत्या केवल एक व्यक्ति की असामयिक मृत्यु नहीं होती बल्कि उसके परिवार, मित्रों और व्यापक सामाजिक परिवेश पर भी लंबे समय तक गहरा भावनात्मक प्रभाव छोड़ती है। यह समझना महत्वपूर्ण है कि आत्महत्या को केवल अवसाद का परिणाम मानना उचित नहीं है। अवसाद आत्महत्या के जोखिम को बढ़ाने वाला एक महत्वपूर्ण कारक जरूर है लेकिन आत्महत्या का व्यवहार प्रायः अनेक परिस्थितियों के जटिल मेल से उत्पन्न होता है।

मानसिक स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं के साथ-साथ आर्थिक कठिनाइयां, संबंधों में टूटन, पारिवारिक तनाव, सामाजिक अलगाव, हिंसा, नशे की समस्या, गंभीर बीमारी, शैक्षणिक अथवा रोजगार संबंधी दबाव और अचानक घटित कोई गहरा संकट भी व्यक्ति को मानसिक रूप से तोड़ सकता है। कई बार बाहरी तौर पर सामान्य दिखाई देने वाला व्यक्ति भी भीतर से गहरे संघर्ष से गुजर रहा होता है। इसलिए आत्महत्या की रोकथाम का पहला कदम व्यक्ति को कमजोर या असफल समझना नहीं बल्कि उसकी पीड़ा को गंभीरता से समझना है। संकट में घिरे व्यक्ति को उपदेश से अधिक सुनने वाला कान, निर्णय सुनाने के बजाय सहानुभूति और अकेला छोड़ने के बजाय भरोसेमंद साथ चाहिए। परिवार, मित्र, शिक्षक और सहकर्मी यदि व्यवहार में आए अचानक बदलाव, निराशा, सामाजिक दूरी या असहायता के संकेतों को समय रहते पहचानें और व्यक्ति को मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञों तक पहुंचने के लिए प्रोत्साहित करें तो संकट को गंभीर रूप लेने से रोका जा सकता है। आत्महत्या रोकथाम का वास्तविक अर्थ यही है, मौत के विचार से पहले उम्मीद का रास्ता दिखाई देना।

मनुष्य जीवन को संसार में सबसे अनमोल माना गया है क्योंकि हमारा यह जीवन एकमात्र ऐसी चीज है, जिसे हम दोबारा नहीं पा सकते। बहरहाल, यदि कभी जरूरत से ज्यादा तनाव अथवा किसी मानसिक बीमारी का अहसास हो तो तुरंत किसी मनोचिकित्सक से मिलकर अपनी परेशानियों के बारे में खुलकर बात करें। केन्द्र सरकार द्वारा अगस्त 2020 में एक मेंटल हैल्थ रिहैबिलिटेशन हेल्पलाइन (किरण हेल्पलाइन) नंबर भी जारी किया गया था, जिस पर कॉल करके ऐसी स्थिति में मदद या काउंसलिंग की मांग की जा सकती है। इसके अलावा भी कई सुसाइड हेल्पलाइन नंबर उपलब्ध हैं, जिनका उपयोग आत्महत्या की घटनाओं पर अंकुश लगाने के लिए किया जा सकता है। लोगों में मानसिक स्वास्थ्य के प्रति जागरुकता फैलाकर भी आत्महत्या जैसे मामलों को काफी हद तक कम किया जा सकता है। किसी भी व्यक्ति के मन में आत्महत्या का विचार आए ही नहीं, ऐसा वातावरण तैयार करना परिवार के साथ-साथ समाज की भी बड़ी जिम्मेदारी है।

-यह लेखक के अपने विचार हैं।

हेल्थ अपडेट

विटामिन बी1 की कमी से हो सकता है 'वेट ब्रेन', दिमाग में होने लगता है बदलाव

शरीर में विटामिन बी1 की कमी होने पर व्यक्ति को न्यूरोलॉजिकल समस्या का सामना करना पड़ सकता है। इसमें व्यक्ति को वेट ब्रेन की समस्या हो सकती है। इस समस्या को Wernicke-Korsakoff Syndrome कहा जाता है। यह समस्या खासतौर पर लंबे समय तक अत्यधिक शराब का सेवन करने वाले लोगों में देखी जाती है, लेकिन केवल शराब पीने वालों को ही इसका खतरा हो, ऐसा नहीं है। गंभीर कुपोषण, शरीर में पोषक तत्वों का ठीक से अवशोषण न होना और लंबे समय तक उल्टी जैसी स्थितियां भी इसकी वजह बन सकती हैं।

एनसीबीआई के अनुसार विटामिन B1 शरीर में भोजन से ऊर्जा बनाने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। खासतौर पर मस्तिष्क को लगातार काम करने के लिए ग्लूकोज से ऊर्जा की जरूरत होती है और थायमिन इस एनर्जी मेटाबॉलिज्म से जुड़ी कई एंजाइम प्रक्रियाओं के लिए आवश्यक है। इसलिए इसकी गंभीर कमी होने पर दिमाग और तंत्रिका तंत्र सबसे ज्यादा प्रभावित हो सकते हैं। थायमिन की कमी होने पर मस्तिष्क में ऊर्जा उत्पादन प्रभावित हो सकता है। इससे लैक्टेट और पाइरुवेट जैसे पदार्थों का असामान्य संचय, कोशिकाओं में सूजन और न्यूरोनल डैमेज (neuronal damage) जैसी प्रक्रियाएं शुरू हो सकती हैं।

क्लीवलैंड क्लीनिक के अनुसार थायमिन की कमी का असर सिर्फ दिमाग तक सीमित नहीं रहता। शरीर में इसकी कमी होने पर कमजोरी, भूख कम लगना, वजन कम होना और पेरिफेरियल नर्वस से जुड़े लक्षण भी दिखाई दे सकते हैं। गंभीर स्थिति में न्यूरोलॉजिकल प्रॉब्लम और हृदय से संबंधित जटिलताएं भी विकसित हो सकती हैं। एनसीबीआई के मुताबिक दिमाग से जुड़े प्रभावों में भ्रम, याददाश्त में परेशानी, ध्यान लगाने में कठिनाई और मानसिक स्थिति में बदलाव शामिल हो सकते हैं। Wernicke encephalopathy की क्लासिक तीनों समस्याएं भ्रम, चलने में असंतुलन और आंखों की समस्या हर मरीज में एक साथ दिखाई नहीं देतीं। शोध और चिकित्सकीय स्रोतों के अनुसार यह पूरी तरह केवल कुछ मरीजों में ही मौजूद होती है।

यदि किसी व्यक्ति में शराब के सेवन से जुड़ी समस्या है, तो केवल Vitamin B1 लेने से जोखिम पूरी तरह खत्म नहीं होता। पर्याप्त पोषण और शराब का सेवन बंद करना भी उपचार और भविष्य के जोखिम को कम करने के महत्वपूर्ण हिस्से हैं। शरीर में किसी भी तरह के कुपोषण से बचने के लिए आपको डाइट में पौष्टिक चीजों को शामिल करना चाहिए। यदि, किसी तरह के समस्या के लक्षण महसूस हो तो ऐसे में आप तुरंत डॉक्टर से मिलकर उचित जांच कराएं और सप्लीमेंट्स ले सकते हैं।

निशाना

दिल लुभाने की बात करते हो

प्रदीप कश्यप

दिल लुभाने की बात करते हो।
प्यार पाने की बात करते है।
प्यार जो हो न कम लुटाने से।
उस ख़ज़ाने की बात करते हो।
देर तक वादा रुकने का करके।
जल्दी जाने की बात करते हो।
ख्वाब साकार जो नहीं होते ।
वो दिखाने की बात करते हो।
प्यार करके कबूल दिलवर का।
ज़ख्म खाने की बात करते हो।
छीन कर के तमाम खुशियों को।
सुख दिलाने की बात करते हो।
दोस्त दुश्मन से मिल गया कश्यप।
क्यूँ निभाने की बात करते हो।

टेक्नो अपडेट

शहरों के बिजली संकट को खत्म करने में गेमचेंजर साबित हो रहे हैं वर्टिकल सोलर पैनल

जब भी आप सोलर पैनल्स के बारे में सोचते हैं, तो दिमाग में सबसे पहले किसी की छत पर नीली चादर की तरह बिछे पैनल्स की तस्वीर बनती है। हालांकि शहरों में हर किसी के पास ऐसी छत नहीं होती, जहां सोलर पैनल लगवाए जा सकें। इस समस्या के समाधान के रूप में वर्टिकल सोलर पैनल तकनीक सामने आई है। इसे छतों की जगह पर दीवारों, बालकनी की रेलिंग और बाउंड्री वॉल पर सीधे 90 डिग्री पर लगाए जाते हैं।

नॉर्मल सोलर पैनल से अलग इंस्टॉलेशन होने की वजह से वर्टिकल सोलर पैनल शहरों के बिजली संकट को खत्म करने में गेमचेंजर साबित हो रहे हैं। इनसे न सिर्फ जगह की कमी दूर होती है बल्कि ये सुबह-शाम पीक आवर्स में भरपूर बिजली भी पैदा करते हैं। वर्टिकल सोलर पैनल भी किसी नॉर्मल पैनल की तरह ही फोटोवोल्टाइक इफेक्ट पर काम करते हैं लेकिन इन्हें 75 से 90 डिग्री के बिल्कुल सीधे एंगल पर लगाया जाता है। इस एंगल की वजह से जब सूरज आसमान में नीचे होता है, तो इन पर सीधी धूप पड़ती है। इनमें इस्तेमाल होने वाले सोलर सेल्स धूप को डीसी बिजली में बदलते हैं, जिसे इन्वर्टर के जरिए AC बिजली में बदलकर घरों और ग्रिड तक भेजा जाता है। वर्टिकल सोलर पैनल की खासियत है कि इनमें बाइफेशियल यानी दोनों तरफ से बिजली बनाने वाले सेल्स का इस्तेमाल किया जाता है। इसका फायदा होता है कि ये पैनल सामने से पड़ने वाली धूप को तो सोखते ही हैं, साथ ही इसके पीछे की सतह दीवारों, जमीन या आसपास की चीजों से टकराकर लौटने वाली रोशनी को भी पकड़ लेती है। इस वजह से आम पैनल के मुकाबले ये 10 से 30 प्रतिशत तक एक्स्ट्रा बिजली बना सकते हैं।

मैंटेनेंस का झंझट खत्म: वर्टिकल सोलर पैनल की एक खासियत यह भी है कि इस पर धूल, मिट्टी और पक्षियों की बीट आसानी से जम नहीं पाती। इसकी वजह से आम सोलर पैनल्स की बिजली बनाने की ताकत 20-30% तक गिर जाती है। वर्टिकल पैनल्स बिल्कुल सीधे खड़े होते हैं, जिससे धूल और कचरा इन पर टिकता ही नहीं और बारिश में यह खुद साफ हो जाते हैं। इसके अलावा, बर्फबारी वाले इलाकों में जहां नॉर्मल पैनल बर्फ के नीचे दब जाते हैं, वहीं वर्टिकल पैनल्स पर बर्फ नहीं जमती और वे कड़ाके की ठंड में भी काम करते रहते हैं। वर्टिकल सोलर पैनल को कई जगहों पर इंस्टॉल किया जा सकता है। इन्हें किसी भी इमारत की बाहरी दीवार पर सीधे लगाया जा सकता है, जहां यह बिल्डिंग का हिस्सा बनकर बिजली बनाते रहते हैं।

अजब - गजब

चूहे को पकड़ने घर में लगाया पिंजरा सुबह उसमें फंसा जहरीला कोबरा

चूहों से परेशान एक परिवार ने उन्हें पकड़ने के लिए घर में पिंजरा लगाया था। परिवार को उम्मीद थी कि सुबह तक उसमें कोई चूहा फंसा मिलेगा और कई दिनों से चल रही परेशानी खत्म हो जाएगी। लेकिन अगली सुबह जब पिंजरे को देखा गया तो परिवार के होश उड़ गए। पिंजरे के अंदर चूहे की जगह एक विशाल जहरीला कोबरा मौजूद था।

अजीबोगरीब यह घटना बिहार के पश्चिम चंपारण जिले के बेतिया इलाके में सामने आई। लक्ष्मीपुर क्षेत्र में एक परिवार ने चूहों को पकड़ने के लिए पिंजरे वाला ट्रैप लगाया था। रात में परिवार के लोगों ने पिंजरा वहीं छोड़ दिया। उन्हें बिल्कुल अंदाजा नहीं था कि सुबह उनके सामने ऐसा दृश्य आने वाला है, जिसे देखने के लिए आसपास के लोग भी जमा हो जाएंगे। सुबह जब परिवार ने पिंजरा देखा तो उसमें एक बड़ा सांप फंसा हुआ था। पहले तो लोगों को विश्वास ही नहीं हुआ कि जिस पिंजरे को चूहे पकड़ने के लिए लगाया गया था, उसमें सांप कैसे पहुंच गया। पास जाकर देखने पर पता चला कि वह कोई सामान्य सांप नहीं बल्कि जहरीला कोबरा था।

चूहे की जगह सांप देखकर मची अफरा-तफरी: कोबरा को पिंजरे के भीतर देखकर परिवार के लोग डर गए। उन्होंने खुद उसे निकालने की कोशिश नहीं की। खबर आसपास के लोगों तक पहुंची तो बड़ी संख्या में ग्रामीण मौके पर पहुंच गए। देखते ही देखते चूहे पकड़ने वाला छोटा-सा पिंजरा लोगों के लिए कौतूहल का विषय बन गया। लोग दूर खड़े होकर कोबरा को देखते रहे। कई लोग यह समझने की कोशिश करते रहे कि आखिर इतना बड़ा सांप उस पिंजरे में पहुंचा कैसे।

सामान्य तौर पर ऐसे पिंजरे चूहों जैसे छोटे जीवों को पकड़ने के लिए बनाए जाते हैं। लेकिन इस मामले में प्रकृति ने पूरा खेल ही उलट दिया। परिवार ने जिस जीव को पकड़ने के लिए जाल बिछाया था, उसकी जगह खुद एक खतरनाक शिकारी उसमें कैद हो गया।

कैसे फंसा, यह भी बना सवाल: घटना का सबसे दिलचस्प पहलू यही है कि कोबरा पिंजरे में किस तरह घुसा। संभव है कि वह चूहे या उसके लिए रखे गए भोजन की तलाश में वहां पहुंचा हो। लेकिन पिंजरे की बनावट ऐसी रही होगी कि अंदर जाने के बाद वह बाहर नहीं निकल पाया।

विशेषज्ञों के अनुसार बारिश और मौसम में बदलाव के दौरान सांप अक्सर सुरक्षित जगह और भोजन की तलाश में घरों या आबादी वाले क्षेत्रों के आसपास पहुंच जाते हैं। ऐसे में ग्रामीण इलाकों में सांपों का घरों में पहुंचना असामान्य नहीं है।

दिव्यांगों की सुविधा के लिए सामाजिक न्याय कार्यालय भूतल पर होगा शिफ्ट

एक परिसर में संचालित होंगी बाल संरक्षण से जुड़ी सभी इकाइयां, कलेक्टर ने निरीक्षण कर दिए निर्देश

नर्मदापुरम। दोपहर मेट्रो

दिव्यांगजनों और हितग्राहियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए जिला पंचायत भवन में संचालित सामाजिक न्याय विभाग का कार्यालय अब भूतल पर शिफ्ट किया जाएगा। कलेक्टर सोमेश मिश्रा ने बुधवार को जिला पंचायत भवन का निरीक्षण करते हुए अधिकारियों को इसके निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि दिव्यांगजनों को कार्यालय तक पहुंचने में परेशानी नहीं होनी चाहिए और उनकी समस्याओं का आसानी से निराकरण हो, इसके लिए कार्यालय भूतल पर होना जरूरी है।

निरीक्षण के दौरान कलेक्टर ने बाल कल्याण समिति कार्यालय का भी जायजा लिया। यहां किशोर न्याय बोर्ड, बाल कल्याण समिति, चाइल्ड हेल्पलाइन कंट्रोल और विशेष किशोर पुलिस इकाई का संचालन किया जाना है। कलेक्टर ने सभी इकाइयों को एक ही परिसर में समन्वित रूप से संचालित करने के निर्देश दिए।

बच्चों के लिए विकसित होगा 'बाल भवन'

कलेक्टर ने परिसर का नाम 'बाल भवन' रखने का सुझाव दिया। उन्होंने कहा कि परिसर को बच्चों के लिए सुरक्षित, सहज और अनुकूल वातावरण के रूप में विकसित किया जाए। यहां लाइब्रेरी, खेल उपकरण सहित बच्चों के लिए जरूरी सुविधाएं उपलब्ध कराने की योजना है। कलेक्टर की पहल पर नर्मदापुरम में इसे एकीकृत बाल संरक्षण एवं कल्याण केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

पीडब्ल्यूडी से एस्टीमेट तैयार कराने के निर्देश

कलेक्टर ने जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी को लोक निर्माण विभाग से समन्वय कर आवश्यक निर्माण और विकास कार्यों का एस्टीमेट तैयार कराने के निर्देश दिए। साथ ही पहले से चल रहे निर्माण कार्यों की नियमित मॉनिटरिंग कर उन्हें निर्धारित समय-सीमा में पूरा कराने को कहा। निरीक्षण के दौरान डिप्टी कलेक्टर सीमा बडोले और जिला महिला एवं बाल विकास अधिकारी संजय जैन मौजूद रहे।

कॉम्बिंग गश्त में 25 गिरफ्तारी वारंट तामील, 23 वारंटी न्यायालय में पेश

तेंदूखेड़ा। मंगलवार को तेंदूखेड़ा पुलिस द्वारा चलाए गए कॉम्बिंग गश्त के दौरान विभिन्न मामलों में लंबित गिरफ्तारी वारंटों की तामीली के साथ शराब संबंधी तीन कार्रवाई की गई। अभियान के दौरान पुलिस ने कुल 25 गिरफ्तारी वारंट तामील किए। पुलिस जांच में 25 वारंटों में से 2 वारंटी मृत पाए गए, जबकि 1 वारंट कैंसलेशन का निकला।

इसके बाद शेष वारंटों में कार्रवाई करते हुए 23 वारंटियों को बुधवार को न्यायालय के समक्ष पेश किया गया। इसी अभियान के दौरान पुलिस द्वारा एक स्थाई वारंटी को भी गिरफ्तार कर न्यायालय में पेश किया गया। कॉम्बिंग गश्त के दौरान नगर निरीक्षक सरोज सिंह ठाकुर के नेतृत्व में तेंदूखेड़ा थाना पुलिस का समस्त स्टाफ सक्रिय रहा। पुलिस टीम ने अलग-अलग स्थानों पर दबिश देकर वारंटियों की तलाश की और लंबित न्यायालयीन वारंटों की तामीली की। पुलिस द्वारा अभियान के दौरान अवैध शराब के संबंध में भी तीन कार्रवाई की गईं। पुलिस अधिकारियों ने बताया कि क्षेत्र में कानून व्यवस्था बनाए रखने तथा फरार एवं वारंटियों की धरपकड़ के लिए इस तरह के अभियान आगे भी जारी रहेंगे। साथ ही अवैध शराब सहित अन्य आपराधिक गतिविधियों पर प्रभावी कार्रवाई की जाएगी।

न्यूज विंडो

संत रविदास ऐसे संत थे जिन्होंने कठौती में गंगा प्रकट की थी मंत्री लोधी

तेन्दूखेड़ा। जबेरा विधानसभा में संत शिरोमणि श्री गुरु रविदास महाराज की 650वीं जयंती पर समरसता संकल्प अभियान के तहत कलश वंदनयात्रा निकाली जा रही है जिसका नेतृत्व स्थानीय विधायक एवं मंत्री धर्मेन्द्र सिंह लोधी कर रहे और जहां जहां रविदास जी मंदिर बना है उस ग्राम में पहुंचकर कलश स्थापना कर विधि विधान से पूजन अर्चन कर आगे बढ़ रहे। इस यात्रा में शिरोमणि जी की जन्मस्थली से पहुंची पवित्र मिट्टी,जल, गुरु ग्रंथ स्थापित कर रहे हैं मंत्री श्री लोधी ने कहा कि रविदास जी ने संदेश दिया था कि धर्म किसी एक जाति का नहीं है सभी के लिए समान है उन्होंने कहा ऐसा चाहू राज मैं मिले सभी को अन्न छोटे बड़ सम बसे रविदास रहे प्रसन्न।

संत रविदास जी कहते हैं कि मैं ऐसा राज्य (समाज) चाहता हूँ, जहाँ देश के हर एक व्यक्ति को पेट भर के भोजन (अन्न) मिले। वहाँ किसी भी प्रकार का भेदभाव न हो, छोटा और बड़ा हर व्यक्ति एक समान (समरसता और बराबरी के साथ) रहे।

प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के तहत 54 गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण

तेंदूखेड़ा. प्रधानमंत्री सुरक्षित मातृत्व अभियान के अंतर्गत बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तेंदूखेड़ा में गर्भवती महिलाओं के लिए निशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण एवं जांच शिविर आयोजित किया गया। शिविर में क्षेत्र से पहुंचीं कुल 54 गर्भवती महिलाओं का स्वास्थ्य परीक्षण किया गया। इनमें 34 हाई रिस्क गर्भवती महिलाएं तथा 20 सामान्य गर्भवती महिलाएं शामिल रहीं। हाई रिस्क गर्भवती महिलाओं की विशेष जांच एवं स्वास्थ्य परीक्षण डॉ. कुलदीप अजमानी एवं स्टाफ नर्स सुधा बघेल द्वारा किया गया। चिकित्सकों एवं स्वास्थ्यकर्मियों ने गर्भवती महिलाओं को नियमित स्वास्थ्य जांच कराने, समय पर आवश्यक परीक्षण कराने तथा चिकित्सकों की सलाह के अनुसार दवाओं का सेवन करने की जानकारी दी।

अज्ञात कारणों के चलते वृद्ध ने पेड़ से फांसी लगाकर की आत्महत्या

तेंदूखेड़ा। नगर के वार्ड क्रमांक 2 स्थित केवट मोहल्ले में बुधवार दोपहर एक वृद्ध व्यक्ति द्वारा फांसी लगाकर आत्महत्या किए जाने का मामला सामने आया है। घटना की सूचना मिलते ही तेंदूखेड़ा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और जांच-पड़ताल शुरू की। पुलिस ने शव को फंदे से नीचे उतारकर पंचनामा कार्रवाई की तथा पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया। प्राप्त जानकारी के अनुसार सुरेश कुमार पिता बाबूलाल केवट, उम्र 53 वर्ष, निवासी वार्ड क्रमांक 2, केवट मोहल्ला ने बुधवार दोपहर करीब 12 बजे अपने घर के पीछे लगे बबूल के पेड़ से फांसी लगा ली। घटना के समय घर पर कोई मौजूद नहीं था। परिवार के सभी सदस्य अपने-अपने काम से बाहर गए हुए थे। जांच में जुटी पुलिस मृतक के छोटे भाई राकेश केवट ने बताया कि घटना के समय परिवार के सदस्य घर पर नहीं थे। इसी दौरान सुरेश कुमार ने यह कदम उठा लिया।

तीन घायल गंभीर हालत में , तीनों को दमोह से जबलपुर मेडिकल कॉलेज किया रेफर

तेज रफ्तार बस ने बाइक को मारी टक्कर

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

मंगलवार शाम तेजगढ़ थाना क्षेत्र की इमलिया चौकी अंतर्गत झापन-लकलका मार्ग पर तेज रफ्तार बस ने बाइक सवार तीन लोगों को पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में बाइक सवार तीनों लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घटना के बाद राहगीरों ने 108 एंबुलेंस एवं डायल-112 को सूचना दी। सूचना मिलते ही 108 वाहन मौके पर पहुंचा और घायलों को उपचार के लिए जिला अस्पताल दमोह पहुंचाया, जहां प्राथमिक उपचार के बाद उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए देर रात जबलपुर मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया गया।

तेरहवीं कार्यक्रम में शामिल होकर लौट रहे थे जानकारी के अनुसार भागचंद पिता रामप्रसाद अहिरवार उम्र 25 वर्ष, अर्चना पति घनश्याम अहिरवार उम्र 23 वर्ष और निकिता पिता घनश्याम अहिरवार उम्र 3 वर्ष, सभी निवासी कोडल थाना तेंदूखेड़ा, रिश्तेदारी में तेरहवीं कार्यक्रम में शामिल होने झापन गए थे। कार्यक्रम के बाद मंगलवार शाम करीब साढ़े 6 बजे तीनों बाइक से अपने गांव कोडल लौट रहे थे। इसी दौरान झापन और लकलका के बीच पीछे से आ रही तेज रफ्तार बस ने बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर इतनी जोरदार थी कि बाइक सवार सड़क किनारे दूर जा गिरे। जबलपुर-सागर के बीच चलती है

बस घायल भागचंद अहिरवार ने बताया कि हादसा करीब साढ़े 6 बजे हुआ। जिस बस ने टक्कर मारी, वह जबलपुर से सागर की ओर जा रही थी और प्रतिदिन तेंदूखेड़ा से सागर-जबलपुर मार्ग पर संचालित होती है। घटना की सूचना मिलते ही पुलिस ने भी मामले की जानकारी जुटाना शुरू कर दिया।

अंधे मोड़ और सिंगलबन रहे हादसों का कारण

अंधे मोड़ और सिंगल सड़क बन रहे हादसों का कारण स्थानीय लोगों के अनुसार इमलिया-झापन मार्ग पर कई अंधे मोड़ हैं और सड़क भी कई स्थानों पर संकरी है। पिछले वर्ष बारिश के दौरान झापन घाट का पुल बह जाने के बाद क्षेत्र के लोगों को वैकल्पिक मार्ग से आवागमन करना पड़ रहा है। झलौन होते हुए इमलिया, लकलका और झापन पहुंचने के कारण लोगों को पहले की तुलना में करीब 30 किलोमीटर अतिरिक्त दूरी तय करनी पड़ रही है। पुल के चालू रहने पर झापन से रहली और सागर की दूरी काफी कम थी। लोगों का कहना है कि लंबा और संकरा मार्ग होने के साथ वाहनों की तेज रफ्तार के कारण आए दिन दुर्घटनाएं हो रही हैं। इनका कहना इमलिया चौकी प्रभारी रमाकांत मिश्रा ने बताया कि घटना की सूचना मिली थी। पुलिस टीम मौके पर पहुंची, लेकिन तब तक घायलों को 108 एंबुलेंस से दमोह जिला अस्पताल ले जाया जा चुका था। घायलों द्वारा एफआईआर दर्ज कराए जाने के बाद बस को जब्त कर नियमानुसार कार्रवाई की जाएगी।

मोड़ पर दो बाइकों की भिड़ंत, तीन घायल; दो जबलपुर रेफर

तेन्दूखेड़ा। क्षेत्र में सड़क हादसों का सिलसिला थमने का नाम नहीं ले रहा है। बुधवार सुबह तेजगढ़ थाना क्षेत्र के कलेहरा-जबेरा मार्ग पर माडनखेड़ा तालाब के पास दो बाइकों की आमने-सामने भिड़ंत हो गई। हादसे में एक ही बाइक पर सवार तीन लोग घायल हो गए। इनमें दो की हालत गंभीर होने पर प्राथमिक उपचार के बाद

जबलपुर मेडिकल कॉलेज रेफर किया गया है। घटना की सूचना मिलते ही तेजगढ़ पुलिस ने मौके पर पहुंचकर जांच शुरू कर दी। जानकारी के अनुसार कोट खमरिया निवासी भगुन्त सिंह लोधी (70), वीरन सिंह लोधी (35) और कृष्ण लोधी (8) बुधवार को बाल कटवाने के लिए बाइक से माडनखेड़ा आए थे।

बाल कटवाने के बाद वापस गांव लौटते समय माडनखेड़ा तालाब के समीप सामने से आ रही तेज रफ्तार बाइक ने उनकी बाइक को टक्कर मार दी। टक्कर के बाद दूसरा बाइक सवार अपनी बाइक मौके पर छोड़कर भाग गया। हादसे के बाद तीनों घायल सड़क किनारे पड़े मिले। राहगीरों ने डायल-112 को सूचना दी। सूचना पर पायलट चरण सिंह ठाकुर और आरक्षक 79 प्रमोद ठाकुर मौके पर पहुंचे और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र तेंदूखेड़ा पहुंचाया।

जहरीली शराब के कारण कई परिवारों के घरों में मातम

बंडा क्षेत्र में जहरीली शराब के विरोध में जयस ने प्रशासन को सौंपा ज्ञापन

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

मध्य प्रदेश के सागर जिले के अंतर्गत आने वाले बंडा तहसील में जहरीली शराब पीने से घटित दर्दनाक घटना अत्यंत चिंताजनक एवं गंभीर विषय है इस घटना ने समाज की प्रत्येक संवेदनशील व्यक्ति को झंकझोर कर रख दिया है जहरीली शराब के कारण कई परिवारों के घरों में मातम छा गया है निर्दोष लोगों की जान चली गई है जो बेहद पीड़ा दायक है हम सभी मृतकों के परिजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं और शासन प्रशासन से मांग करते हैं कि इस मामले में संवेदनशीलता और गंभीरता दिखाते हुए न्याय सुनिश्चित करें जय आदिवासी युवा शक्ति जयस द्वारा महामहिम राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री मध्य प्रदेश के नाम अनुविभागीय अधिकारी तहसील तेंदूखेड़ा को ज्ञापन सौपा गया जिसमें मांग की गई थी बंडा तहसील में जहरीली

शराब से घटित घटना की उच्च स्तरीय जांच कराई जाए तथा दोषियों पर कड़ी से कड़ी कानूनी कार्रवाई की जाए एवं भविष्य में ऐसी घटनाओं की पुनरावृत्ति रोकने के लिए ठोस कदम उठाए जाए साथ ही अवैध शराब के कारोबार पर तत्काल प्रभाव से रोक लगाई जाए जय आदिवासी युवा शक्ति जयस प्रदेश संगठन मंत्री श्रीकांत सिंह पोरते ने बताया कि बंडा क्षेत्र में जहरीली शराब के कारण कई परिवारों ने अपनों को खोया है इस घटना ने समाज की प्रत्येक व्यक्ति को झंकझोर कर रख दिया है ग्रामीण क्षेत्रों में भी अवैध शराब का कारोबार निरंतर किया जा रहा है शासन प्रशासन को इस घटना से सबक लेते हुए अवैध शराब कारोबार पर तत्काल रोक लगानी चाहिए हम सभी सरकार से मांग करते हैं की इस प्रकार की घटनाओं को रोकने के लिए शासन प्रशासन जल्द से जल्द ठोस कदम उठाए तथा बंडा क्षेत्र में जहरीली शराब पीने से मृतकों के परिजनों को सरकार द्वारा तत्काल उचित मुआवजा राशि प्रदान करें .

भव्य कलश यात्रा के साथ

श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ

तेंदूखेड़ा। दोपहर मेट्रो

नगर में बुधवार से सात दिवसीय श्रीमद्भागवत कथा का शुभारंभ धार्मिक एवं उत्साहपूर्ण वातावरण में हुआ। कथा का आयोजन 9 सितंबर से 15 सितंबर तक गौशाला परिसर में अयोध्यावासी सोनी परिवार द्वारा करवाया जा रहा है।

प्रथम दिवस कथा वाचक पंडित विपिन बिहारी दास जी महाराज का नगरवासियों द्वारा भव्य स्वागत किया गया। इसके बाद पंचवटी मंदिर से गाजे-बाजे और आतिशबाजी के साथ भव्य कलश एवं शोभायात्रा निकाली गई। कलश यात्रा पंचवटी मंदिर से प्रारंभ होकर तारादेही तिराहा, पुलिस थाना, राम मंदिर, बस स्टैंड एवं सुपर मार्केट होते हुए गौशाला परिसर पहुंची। यात्रा में महिलाएं एक जैसी वेशभूषा में सिर पर कलश धारण कर शामिल हुईं। हजारों की संख्या में नगर एवं क्षेत्र के श्रद्धालु यात्रा में शामिल हुए। विभिन्न धार्मिक झांकियां भी शोभायात्रा का आकर्षण रहीं।

कथा के प्रथम दिवस पंडित विपिन बिहारी दास जी महाराज ने कहा कि 'भागवत कोई किताब नहीं, बल्कि जीवन जीने का तरीका है।' भागवत कथा केवल सुनने का विषय नहीं है, बल्कि इसके संदेशों को अपने आचरण में उतारने की आवश्यकता है।

मेट्रो एंकर

रासायनिक खेती छोड़ प्राकृतिक खेती करने किसानों को किया प्रेरित

गोकुलपुर में कृषि रोडमैप कार्यक्रम के तहत एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण आयोजित

गंजबासौदा। दोपहर मेट्रो

कृषि रोडमैप कार्यक्रम के अंतर्गत ब्लॉक नटेरन के ग्राम गोकुलपुर में ओएफआर सेंटर, कृषि महाविद्यालय के तत्वावधान में एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम का उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती के सिद्धांतों, तकनीकों और उससे होने वाले लाभों की जानकारी देकर इसे अपनाने के लिए प्रेरित करना था। कार्यक्रम के शुभारंभ अवसर पर भारतीय कृषि प्रणाली अनुसंधान संस्थान (आईआईएफएसआर) से

पहुंचे वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. रघुवीर सिंह ने किसानों को प्राकृतिक खेती के महत्व की जानकारी दी।

उन्होंने कहा कि रासायनिक खाद एवं कीटनाशकों के अत्यधिक उपयोग से मिट्टी की उर्वरता और स्वास्थ्य प्रभावित हो रहा है। प्राकृतिक खेती को अपनाकर किसान खेती की लागत कम करने के साथ-साथ मिट्टी की सेहत में सुधार कर सकते हैं और गुणवत्तापूर्ण एवं स्वास्थ्यवर्धक कृषि उत्पाद प्राप्त कर सकते हैं। प्रशिक्षण के दौरान कृषि महाविद्यालय के अधिष्ठाता डॉ. विनोद कुमार गर्ग ने खरीफ सीजन की फसलों में लगने वाले प्रमुख कीटों की पहचान, उनके लक्षण तथा जैविक एवं प्राकृतिक तरीकों से नियंत्रण की जानकारी किसानों को दी। इसके बाद डॉ. आशीष श्रीवास्तव ने खरीफ फसलों में होने वाले प्रमुख रोगों के लक्षण, कारण और उनकी रोकथाम के वैज्ञानिक एवं व्यावहारिक उपायों के बारे में विस्तार से समझाया।कृषि वैज्ञानिक डॉ. नम्रता जैन ने प्राकृतिक खेती में उपयोग होने वाले प्रमुख घटकों और अवयवों की जानकारी दी।

उन्होंने किसानों को जीवामृत, बीजामृत एवं घनजीवामृत तैयार करने की विधि समझाई। साथ ही प्राकृतिक तरीके से बीज उपचार करने की प्रक्रिया का व्यावहारिक प्रदर्शन भी किया.

भगवती मानव कल्याण संगठन ने एसडीएम को कलेक्टर व एसपी के नाम सौंपा ज्ञापन

अवैध शराब की बिक्री और गांव-गांव आपूर्ति पर रोक लगाने की मांग

तेंदूखेड़ा। सागर जिले के बंडा क्षेत्र में जहरीली शराब से हुई मौतों के बाद तेंदूखेड़ा क्षेत्र में भी अवैध शराब के कारोबार को लेकर चिंता सामने आने लगी है इसी को लेकर बुधवार को भगवती मानव कल्याण संगठन एवं भारत शक्ति चेतना पार्टी से जुड़े कार्यकर्ताओं ने जिला कलेक्टर एवं पुलिस अधीक्षक दमोह के नाम संबोधित ज्ञापन तेन्दूखेड़ा एसडीएम सीजी गोस्वामी को सौंपकर अवैध शराब की बिक्री एवं लायसेंसी दुकानों से गांव-गांव शराब पहुंचाने पर तत्काल रोक लगाने की मांग की.

गांव गांव शराब भेजने के लगे आरोप

ज्ञापन में आरोप लगाया गया कि तेंदूखेड़ा विकासखंड के अंतर्गत तेंदूखेड़ा, तारादेही, झलौन और तेजगढ़ स्थित लायसेंसी शराब दुकानों से कथित रूप से गांव-गांव शराब पहुंचाई जा रही है। संगठन ने संबंधित शराब दुकानों के सीसीटीवी फुटेज की जांच कर दोषी पाए जाने पर नियमानुसार कार्रवाई करने तथा आवश्यकता होने पर लाइसेंस निरस्त करने की मांग की .

होटल-ढाबों पर दबिश; 5600 लीटर गुड़-लाहन और 75 लीटर कच्ची शराब जब्त

अवैध शराब पर आबकारी विभाग का शिकंजा एक दिन में 45 केस दर्ज, 25 आरोपी गिरफ्तार

धार। दोपहर मेट्रो

अवैध शराब के निर्माण, परिवहन और बिक्री के खिलाफ आबकारी विभाग ने जीरो टॉलरेंस नीति के तहत जिलेभर में व्यापक कार्रवाई की। अभियान के दौरान अवैध शराब का विक्रय एवं परिवहन करने वालों के खिलाफ कार्रवाई करते हुए एक ही दिन में 45 प्रकरण दर्ज किए गए, जबकि 25 आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। कार्रवाई के दौरान आबकारी विभाग ने अवैध शराब जब्त की। कलेक्टर राजीव रंजन मीणा के निर्देशन एवं सहायक आबकारी आयुक्त दीपक अवस्थी के मार्गदर्शन में विभागीय टीमों ने ग्रामीण अंचलों में एक साथ सर्चिंग अभियान चलाते हुए होटल, ढाबों सहित संदिग्ध स्थानों पर दबिश दी। विभाग के अनुसार जिले में अभी तक संदिग्ध जहरीली शराब से संबंधित कोई प्रकरण सामने नहीं आया है। हालांकि, किसी भी संभावित स्थिति से निपटने के लिए विभाग पूरी तरह सतर्क है। कार्रवाई के दौरान जब्त की गई शराब के नमूने भी नियमानुसार लिए जाकर उनकी सैंपलिंग करवाई जा रही है। उक्त कार्यवाही सहायक जिला आबकारी अधिकारी प्रशांत मंडलोई, डॉ निलेश नेमा, आबकारी उप निरीक्षक राज कुमार शुक्ला,संग्राम सिंह गोरे, मुनेंद्र जादौन,

अश्विनी रोजड़े,वर्षा राजपूत, जितेंद्र राठौर एवं धार,सागौर, सरदारपुर एवं बदनावर की टीम संयुक्त टीम द्वारा की गई।

वहीं इस मामले में सहायक आबकारी अधिकारी दीपक अवस्थी ने बताया कि जीरों टॉलरेंस नीति के तहत अवैध शराब परिवहन व विक्रय को लेकर विभागीय टीम लगातार कार्यवाही कर रही है। जिले में अभी तक संदिग्ध जहरीली शराब को लेकर कोई प्रकरण सामने नहीं आया हैं, किंतु विभागीय टीम अलर्ट है। जप्त शराब की सैंपलिंग भी करवाई जा रही हैं। एक दिन में 45 प्रकरण दर्ज कर अवैध शराब को जप्त किया गया है। अवैध शराब के कारोबार में लिप्त लोगों के खिलाफ आगे भी इसी तरह लगातार कार्रवाई जारी रहेगी।

इधर, परिवहन पर रख रही नजर

विभागीय टीमों ने अवैध शराब बनाने के लिए उपयोग किए जा रहे महुआ लहान के खिलाफ भी कार्रवाई की। ग्रामीण क्षेत्रों में अवैध शराब के संभावित ठिकानों की लगातार निगरानी की जा रही है। जहरीली शराब के निर्माण एवं बिक्री की आशंका को देखते हुए विभाग विशेष रूप से अलर्ट है। सहायक आबकारी आयुक्त अवस्थी ने जिले के सभी वृत्त अधिकारी व सहायक जिला आबकारी अधिकारियों की बैठक लेकर क्षेत्र में लगातार सर्चिंग अभियान चलाने व जब्त मदिरा के सैंपल समय-समय पर लेने के निर्देश दिए हैं। अवैध शराब के परिवहन को रोकने के लिए आबकारी विभाग ने विशेष रणनीति तैयार की है। जिले के धरमपुरी में 6, गंधवानी में 5, सरदारपुर में 6, धार में 5, बदनावर व कुक्षी में 4-4 व सागौर में तीन प्रकरण अवैध शराब बिक्री को लेकर दर्ज किए गए है। साथ ही संयुक्त टीम द्वारा सूरजपुरा नाले किनारे सूरजपुरा तालाब किनारे एवं सादी नदी, मूसपुरा दी गई दबीश में कुल 5600 लीटर गुड़ -लाहन और 75 लीटर कच्ची शराब जप्त कर कुल 05 प्रकरण दर्ज किए गए।

20 साल की सजा, जमानत रद्द फिर भी फरार, सिद्दीक गिरफ्तार

न्यायालय में पेशी के बाद भेजा गया धार जेल

धार। दोपहर मेट्रो

जिले के थाना सादलपुर पुलिस ने जमानत निरस्त होने के बाद लगातार फरार चल रहे गंभीर अपराध के सजायाफ्ता आरोपी सिद्दीक खाँ को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस ने 7 सितंबर 2026 को आरोपी को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय धार के समक्ष पेश किया, जहां से अदालती आदेश पर उसे जिला जेल धार भेज दिया गया।

मामले का विवरण

यह मामला वर्ष 2019 का था, सादलपुर पुलिस ने आरोपी सिद्दीक पिता मुनीर खाँ, निवासी केसुर के खिलाफ अपराध क्रमांक 332/2019 में धारा 363, 366-ए, 376(2), 506 भादवि एवं धारा 5/6 पॉक्सो एक्ट के तहत मामला दर्ज किया था। इस प्रकरण में माननीय न्यायालय ने 9 अप्रैल 2021 को आरोपी को 20 वर्ष के कारावास की सजा सुनाई थी। जमानत पर रहने के दौरान आरोपी ने वर्ष 2022 में पुनः एक और गंभीर अपराध क्रमांक 353/2022, धारा 354 भादवि एवं पॉक्सो एक्ट घटित किया।

उच्च न्यायालय, खण्डपीठ इंदौर में पुलिस के प्रयासों से आरोपी की जमानत निरस्त कराई गई। जमानत रद्द होने के बाद से आरोपी पुलिस की गिरफ्त से बचने के लिए लगातार फरार चल रहा था। वरिष्ठ अधिकारियों के निर्देशन में सादलपुर पुलिस टीम द्वारा आरोपी की लगातार तलाश की जा रही थी। 7 सितंबर को पुलिस ने घेराबंदी कर आरोपी को धर दबोचा।

कार्रवाई में सादलपुर थाना प्रभारी प्रवीण ठाकरे, सहायक उपनिरीक्षक राकेश सिंह मेड़ा, शैलेन्द्र विश्वकर्मा शामिल थे।

न्यूज विंडो

दमोह सांसद राहुल सिंह लोधी ने बीएमसी पहुंचकर शराब से प्रभावितों का जाना हाल

सागर। दमोह सांसद राहुल सिंह लोधी ने आज बुंदेलखंड मेडिकल कॉलेज पहुंचकर संसदीय क्षेत्र दमोह की बंडा विधानसभा के अंतर्गत जहरीली शराब के सेवन से अस्वस्थ हुए नागरिकों से मुलाकात कर उनका कुशल-क्षेम जाना। साथ ही चिकित्सकों को सभी पीड़ितों के त्वरित एवं समुचित इलाज के आवश्यक निर्देश दिए। इस दौरान बंडा विधायक वीरेंद्र सिंह भी थे। उन्होंने ईश्वर से सभी के शीघ्र स्वास्थ्य लाभ की प्रार्थना की।

साक्षरता दिवस : गूंजा अक्षर ज्ञान का संदेश, नवसाक्षरों के चेहरे पर दिखी आत्मनिर्भरता

नरसिंहपुर। कलेक्टर श्रीमती रजनी सिंह के निर्देशन एवं मुख्य कार्यपालन अधिकारी जिला पंचायत श्री गजेन्द्र सिंह नागेश के मार्गदर्शन में अंतर्राष्ट्रीय साक्षरता दिवस के अवसर पर जिले के शासकीय विद्यालयों में उल्लास-नव भारत साक्षरता कार्यक्रम के अंतर्गत सामाजिक चेतना केंद्रों पर विविध कार्यक्रम आयोजित किए गए। अक्षरसाथियों एवं नवसाक्षरों की उपस्थिति में आयोजित कार्यक्रमों में साक्षरता की शपथ दिलाई गई और शिक्षा के महत्व का संदेश दिया गया। सामाजिक चेतना केंद्रों पर अक्षरसाथियों को प्रशस्ति प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया, वहीं नवसाक्षरों का सम्मान कर उन्हें अंकसूचियां वितरित की गईं। इस दौरान नवसाक्षरों के जीवन में साक्षरता से आए सकारात्मक बदलावों पर चर्चा की गई। नवसाक्षरों ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि अक्षर ज्ञान ने उनके आत्मविश्वास और दैनिक जीवन में निर्णय लेने की क्षमता को नई दिशा दी है। हाई स्कूल एवं हायर सेकेंडरी विद्यालयों में साक्षरता की शपथ के पश्चात कक्षा 9वीं से 12वीं तक के विद्यार्थियों को प्रोजेक्ट वर्क के माध्यम से उल्लास-नव भारत साक्षरता कार्यक्रम से जोड़ने संबंधी जानकारी दी गई।

शराब बनी हत्या की वजह आदिवासी महिला की पति ने कुल्हाड़ी मारकर की हत्या

वारदात के बाद आरोपी पति फरार

सागर।दोपहर मेट्रो

जिले के बरोदिया नगर के बड़ा आदिवासी मोहल्ले में सोमवार को एक शराबी पति ने अपनी पत्नी की कुल्हाड़ी मारकर हत्या कर दी। बेटे ने मां बचाने का प्रयास किया तो उसे भी पीटा. सूचना मिलने पर पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम कराया।

पुलिस ने आरोपी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया। उसकी तलाश शुरू कर दी है। जानकारी के अनुसार दोपहर करीब 3 बजे अशोक आदिवासी का पत्नी प्रीती आदिवासी से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। इसी दौरान अशोक ने कुल्हाड़ी से प्रीती पर कई वार कर दिए। इससे उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि घटना के समय आरोपी शराब के नशे में था। मृतका का बेटा मां को बचाने पहुंचा। आरोपी ने उसके साथ भी मारपीट की। उसे वहां से भगा दिया। इसके बाद आरोपी मोहल्ले के लोगों को धमकी देकर मौके से फरार हो गया। पुलिस लगातार तलाश कर रही है। परिजनों से भी पूछताछ की जा रही है। बताया गया है कि आरोपी शराब पीने का आदी था। नशे में अक्सर पत्नी के साथ मारपीट करता था। थाना प्रभारी दिनेश भोजक ने बताया कि सूचना मिली थी कि बड़ा आदिवासी मोहल्ले में एक महिला घायल अवस्था में घर में पड़ी है। उसके पति ने उसके साथ मारपीट की है।

पुलिस मौके पर पहुंची तो महिला मृत मिली। प्रारंभिक कार्रवाई के बाद शव पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया। थाना प्रभारी के अनुसार घटना के चश्मदीदों और साक्षियों के बयान के आधार पर आरोपी अशोक आदिवासी के खिलाफ हत्या का मामला दर्ज किया गया है। आरोपी के तीन छोटे बच्चे हैं। मृतका के चाचा ससुर नीलेश आदिवासी ने बताया कि बड़ा मोहल्ला, वार्ड क्रमांक 2 में आदिवासियों द्वारा कच्ची शराब तैयार कर बेची जाती है।

डायल-112 एफआरवी ने वृद्ध महिला को सुरक्षित पुलिस कंट्रोल रूम पहुंचाया

लापता हुई वृद्ध दादी को सीसीटीवी की मदद से 2 घंटे में सुरक्षित खोज निकाला

सागर। दोपहर मेट्रो

पुलिस की कार्यप्रणाली केवल अपराधों की रोकथाम एवं अपराधियों की धरपकड़ तक सीमित नहीं है, बल्कि जरूरतमंद नागरिकों की सहायता एवं उन्हें सुरक्षित उनके परिजनों तक पहुंचाना भी पुलिस की महत्वपूर्ण जिम्मेदारी है। सागर पुलिस ने एक बार फिर अपनी संवेदनशीलता, तत्परता और आधुनिक तकनीक के प्रभावी उपयोग का उदाहरण प्रस्तुत किया है।

दादी को चौराहे पर बैठाकर गैस एजेंसी गए थे नाती

जानकारी के अनुसार धर्मेंद्र गौड़, निवासी शाहपुर, अपनी दादी को मोटरसाइकिल से लेकर सागर आए थे। उन्हें पोस्ट ऑफिस संबंधी कार्य के लिए सागर आना था। इस दौरान मकरोनिया चौराहे के पास स्थित गैस एजेंसी में कुछ आवश्यक कार्य होने के कारण उन्होंने

अपनी वृद्ध दादी को मकरोनिया चौराहे पर कुछ देर बैठने के लिए कहा और स्वयं गैस एजेंसी चले गए। काम पूरा कर जब धर्मेंद्र वापस मकरोनिया चौराहे पर पहुंचे तो उनकी दादी वहां नहीं मिलीं।

लगभग दोपहर 2 बजे की इस घटना से घबराए धर्मेंद्र ने चौराहे पर ड्यूटी में मौजूद पुलिस अधिकारी से सहायता मांगी। पुलिस अधिकारी ने तत्काल उन्हें पुलिस कंट्रोल रूम सागर जाकर CCTV कैमरों की मदद से तलाश कराने की सलाह दी।

जहरीली शराब से मौतों का मामला

हमने एसपी से कहा है दोषी पर हो सख्त कार्रवाई

सागर।दोपहर मेट्रो

जिले के बण्डा क्षेत्र में दूषित शराब पीने से हुई घटना पर मंत्री गोविंद सिंह का बयान सामने आया. उन्होंने कहा कि आरोपी कोई भी हो की जाये सख्त से सख्त कार्यवाई की जाए. इस दुखद घटना के बीच कुछ मीडिया माध्यमों, कांग्रेस के कुछ नेताओं और सोशल मीडिया पर कुछ लोगों द्वारा यह भ्रामक प्रचार किया जा रहा है कि किसी गांव के एक व्यक्ति का संबंध मेरे परिवार से है अथवा वह मेरा रिश्तेदार है। मैं स्पष्ट रूप से कहना चाहता हूं कि उक्त व्यक्ति मेरा कोई रिश्तेदार नहीं है।

मेरे नाम को इस मामले से जोड़कर गलत जानकारी फैलाना पूरी तरह निराधार है। मैंने स्वयं एसपी सागर से स्पष्ट रूप से कहा है कि इस पूरे मामले की निष्पक्ष जांच हो और जो भी दोषी हो, उसके खिलाफ कड़ी से कड़ी कार्रवाई की जाए। वह किसी का रिश्तेदार हो, नातेदार हो या किसी भी

राजनीतिक अथवा सामाजिक प्रभाव से जुड़ा हो कानून के सामने किसी को भी नहीं छोड़ा जाना चाहिए।

सागर जिला भली-भांति जानता है कि मेरा पूरा परिवार शराब, सट्टा और जुआ जैसी गतिविधियों से हमेशा दूर रहा है। इतना ही नहीं, हम किसी भी कार्यकर्ता को ऐसी गतिविधियों में सहयोग या संरक्षण देने के पक्ष में नहीं हैं।

गणेश प्रतिमाओं के साथ जनसेवा का संकल्प, बच्चों की मांग पर उमंग सिंघार ने तुरंत दी सौगात

धार। दोपहर मेट्रो

दो दिनों में बांटी जाएंगी एक हजार गणेश प्रतिमाएं, 17 वर्षों से निभा रहे परंपरा

मध्य प्रदेश विधानसभा में नेता प्रतिपक्ष एवं गंधवानी विधायक उमंग सिंघार ने बुधवार से अपने विधानसभा क्षेत्र में श्री गणेश प्रतिमाओं के वितरण की शुरुआत की। 17 वर्षों से चली आ रही इस परंपरा के तहत वे क्षेत्र की विभिन्न गणेश समितियों को प्रतिमाएं भेंट कर रहे हैं। इस दौरान उन्होंने धार्मिक आयोजन के साथ जनसरोकार से जुड़े मुद्दों पर भी तत्परता दिखाई।

गणेश प्रतिमा वितरण के दौरान दौलतपुरा स्कूल के समीप बच्चों का स्नेह देखकर विधायक सिंघार ने अपना काफिला रोक दिया और बच्चों से आत्मीयता से संवाद

किया। बातचीत के दौरान स्कूली बच्चों ने स्कूल भवन, पेयजल के लिए बोरिंग तथा खेलकूद सामग्री की आवश्यकता उनके सामने रखी। बच्चों की मांग सुनकर विधायक ने तत्काल बोरिंग और खेल सामग्री की स्वीकृति दे दी। निर्णय की जानकारी मिलते ही बच्चों और शिक्षकों में खुशी का माहौल दिखाई दिया।17 वर्षों से निभा रहे परंपरा

विधायक उमंग सिंघार पिछले 17 वर्षों से लगातार गंधवानी विधानसभा क्षेत्र में गणेश प्रतिमाओं का वितरण करते आ रहे हैं। इस वर्ष भी उन्होंने बुधवार को सलकनपुर से इस परंपरा की शुरुआत की। सलकनपुर स्थित जाट धर्मशाला में पंखे लगवाने के लिए उन्होंने 1.50 लाख रुपये की राशि स्वीकृत की। इसके बाद दौलतपुरा पहुंचकर स्कूली बच्चों से मुलाकात की और गणेश समितियों को प्रतिमाओं का वितरण किया। दौलतपुरा के बाद उन्होंने भूतिबावड़ी और सिंधकुवा पहुंचकर भी गणेश समितियों को प्रतिमाएं भेंट कीं।

मेट्रो एंकर

टांडा रोड से वडोदरा के लिए मेमू सेवा शुरू, पीएम मोदी ने किया वर्चुअल उद्घाटन, केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने दिखाई हरी झंडी

आदिवासी अंचल में पहली बार दौड़ी यात्री ट्रेन, विकास की नई पटरी पर धार

धार। दोपहर मेट्रो

जिले के आदिवासी अंचल में आजादी के बाद पहली बार मेमू यात्री ट्रेन की शुरुआत हुई। मंगलवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने वडोदरा से टांडा रोड से प्रताप नगर वडोदरा तक की इस नियमित यात्री रेल सेवा का वर्चुअल उद्घाटन किया। आजादी के बाद पहली बार धार लोकसभा क्षेत्र में रेल परिचालन आरम्भ हुआ है। इसके अंतर्गत गंधवानी क्षेत्र के टांडा रोड रेलवे स्टेशन से वडोदरा (प्रतापनगर) के लिए मेमू ट्रेन सेवा का शुभारंभ हुआ है। यह केवल रेल सेवा का आरंभ नहीं, बल्कि आदिवासी अंचल के

विकास, आकांक्षाओं और वर्षों पुराने सपने के साकार होने का ऐतिहासिक अवसर बना है। टांडा रोड पर केंद्रीय मंत्री सावित्री ठाकुर ने 12 कोच वाली मेमू ट्रेन को हरी झंडी दिखाई। लोकार्पण समारोह में वंदे मातरम की प्रस्तुति हुई। नियमित रेल सेवा के शुभारंभ को लेकर ग्रामीणों में काफी उत्साह नजर आया व बड़ी संख्या में लोग इस मौके पर पहुंचे। प्रधानमंत्री मोदी के वर्चुअल उद्घाटन पर लोगों ने तालियां बजाकर खुशी जताई। इस रेल सेवा से आदिवासी अंचल की गुजरात से कनेक्टिविटी आसान हो जाएगी। इससे स्वास्थ्य, शिक्षा और रोजगार के नए अवसर खुलेंगे। टांडा रोड से प्रतापनगर के बीच मालगाड़ियां चलाने का भी प्रस्ताव है। इस अवसर पर कैबिनेट मंत्री नागर सिंह चौहान, विधायक नीना विक्रम वर्मा, जिला पंचायत अध्यक्ष सरदार मेडा, जिला अध्यक्ष चंचल पाटीदार सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधिगण एवं ग्रामवासी उपस्थित रहे।

टांडा रोड पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सावित्री ठाकुर ने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में आदिवासी अंचल में विकास की नई गंगा बह रही है। रेल केवल पटरियों और ट्रेनों का विस्तार नहीं है, बल्कि यह शिक्षा, रोजगार, व्यापार, पर्यटन और समृद्धि के नए द्वार खोलने का माध्यम है। मध्य प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव जी का भी विशेष रूप से आभार व्यक्त करते हुए कहा कि जनजातीय समाज के उत्थान और प्रदेश के सर्वांगीण विकास के लिए राज्य सरकार निरंतर प्रतिबद्धता के साथ कार्य कर रही है।

वहीं इस दौरान केंद्रीय राज्य मंत्री सावित्री ठाकुर ने कहा कि आदिवासी भाई-बहनों ने, किसानों ने, हमारे आदिवासी अंचल ने देखा था, वो आज साकार होने जा रहा है। जो रेल टांडा से चलेगी और दो सेतु का काम करेगी, मध्यप्रदेश और गुजरात को जोड़ने का काम करेगी।ऐसी जगह जहाँ कोई आता-जाता नहीं था, वहाँ आदिवासी अंचल में प्रधानमंत्री ने ट्रेन चलाकर बहुत बड़ी सौगात दी है। आदिवासी की लोग बात तो करते हैं, लेकिन प्रधानमंत्री भूमिपूजन भी खुद करते हैं और लोकार्पण भी खुद करते हैं, और आज उन सपनों को साकार कर दिया।

आपदा मित्र बनेगा संकट की घड़ी में मदद का भरोसेमंद हाथ

डिण्डोरी. आपदा के समय त्वरित राहत और बचाव कार्यों के लिए स्थानीय स्तर पर प्रशिक्षित मानव संसाधन तैयार करने के उद्देश्य से आयोजित आपदा मित्र योजना का सात दिवसीय प्रशिक्षण बुधवार को सफलतापूर्वक सम्पन्न हुआ। मध्यप्रदेश राज्य आपदा प्रबंधन प्राधिकरण एवं जिला आपदा प्रबंधन प्राधिकरण होमगार्ड के संयुक्त तत्वावधान में जिला होमगार्ड प्रशिक्षण केंद्र, डिंडौरी में 3 से 9 सितंबर तक प्रशिक्षण आयोजित किया गया। समापन समारोह के मुख्य अतिथि अपर कलेक्टर श्री जे.पी. यादव ने प्रशिक्षुओं से कहा कि आपदा की स्थिति में शुरुआती समय बेहद महत्वपूर्ण होता है।

संन्यास के 13 साल बाद भी सचिन का जलवा कायम

ब्रांड दुनिया में फिर बढ़ी 'क्रिकेट के भगवान' की कीमत, 125.9 करोड़ डॉलर पहुंची कीमत

नई दिल्ली, एजेंसी

क्रिकेट के मैदान से विदाई लिए सचिन तेंदुलकर को करीब 13 साल हो चुके हैं, लेकिन बाजार में उनकी लोकप्रियता आज भी वैसी ही बनी हुई है। क्रिकेट से दूर रहने के बावजूद कंपनियों के लिए सचिन भरोसे, विश्वसनीयता और भारतीय पहचान का मजबूत चेहरा बने हुए हैं। यही कारण है कि समय बीतने के साथ उनकी कारोबारी चमक कम होने के बजाय और बढ़ती जा रही है।

हाल ही में जारी वैश्विक सेलिब्रिटी ब्रांड मूल्यांकन में सचिन की ब्रांड कीमत 12.2 प्रतिशत बढ़कर 12.59 करोड़ डॉलर बताई गई है। इस बढ़ोतरी के साथ वह पांचवें स्थान से ऊपर उठकर चौथे स्थान पर पहुंच गए। खास बात यह है कि सूची में अधिकतर नाम सक्रिय फिल्म सितारों और मौजूदा खेल हस्तियों के हैं, जबकि सचिन इस सूची में लगातार जगह बनाने वाले प्रमुख सेवानिवृत्त खिलाड़ियों में सबसे अलग नजर आते हैं।

शाहरुख और विराट से पीछे, लेकिन कई दिग्गजों से आगे- ब्रांड कीमत के मामले में शाहरुख खान करीब 17.79 करोड़ डॉलर के साथ पहले स्थान पर हैं। रणवीर सिंह 16.29 करोड़ डॉलर के साथ दूसरे और विराट कोहली 15.84 करोड़ डॉलर के साथ तीसरे स्थान पर हैं। सचिन की बढ़ती कीमत बताती है कि मैदान छोड़ने के वर्षों बाद भी उनका प्रभाव बाजार में मजबूत बना हुआ है।

25 से ज्यादा कंपनियों का भरोसा

सचिन का प्रचार से जुड़ा कारोबारी दायरा एक साल में करीब 20 प्रतिशत बढ़ा है। वह अब 25 से अधिक कंपनियों से जुड़े हैं। सामाजिक माध्यमों पर भी उनकी पहुंच करोड़ों लोगों तक है। उनकी सबसे बड़ी ताकत केवल क्रकेट की उपलब्धियां नहीं, बल्कि अलग-अलग पीढ़ियों में बनी विश्वसनीय पहचान है। सचिन की लोकप्रियता महंगे और चमकदार उत्पादों तक सीमित नहीं है। कृषि क्षेत्र से जुड़ी कंपनी एसएमएल ने भी उन्हें अपना ब्रांड चेहरा बनाया है। कंपनी का कारोबार करीब 18 हजार विक्रेताओं और 10 लाख से अधिक किसानों तक पहुंचता है। कंपनी का मानना है कि सचिन के जुड़ने से ग्रामीण बाजार में भी लोगों का ध्यान आकर्षित हुआ है।

पुराना रिश्ता भी बरकरार

सचिन 2018 से अपोलो टायर्स से जुड़े हैं। कंपनी के लिए वह केवल क्रिकेट खिलाड़ी नहीं, बल्कि भारतीय पहचान और वैश्विक पहुंच का प्रतीक हैं। सचिन की सहज छवि और वाहन क्षेत्र में उनकी रुचि इस साझेदारी को मजबूत बनाती है। संन्यास के बाद सचिन की भूमिका सिर्फ विज्ञापनों तक सीमित नहीं रही। वह कई नए कारोबारों में निवेशक और रणनीतिक साझेदार भी हैं। जेप्टो, स्पिनी और ट्रूजोन सोलर जैसे कारोबारों में उनकी भागीदारी रही है। कुछ कंपनियों के साथ उनका रिश्ता प्रचार के साथ निवेश से भी जुड़ा है। खेल परिधान से जुड़े एक नए उद्यम में सचिन उत्पादों की गुणवत्ता और आराम को खुद परखने में भी भूमिका निभाते हैं। यानी जिस व्यक्ति ने मैदान पर गुणवत्ता को अपनी पहचान बनाया, वह आज बाजार में भी उसी भरोसे को कायम रखे हुए है।

एशियन गेम्स, मैदान और ड्रेसिंग रूम की व्यवस्था भी अब संतोषजनक

पांच सितारा नहीं, फिर भी खास इंतजाम! टीम इंडिया के ठहरने पर BCCI संतुष्ट

नई दिल्ली, एजेंसी

एशियाई खेलों में भारतीय क्रिकेट टीम के ठहरने को लेकर पिछले कुछ दिनों से चल रही चर्चाओं पर भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड ने स्थिति स्पष्ट कर दी है। बोर्ड के उपाध्यक्ष राजीव शुक्ला ने बताया कि भारतीय खिलाड़ी एशियाई खेल आयोजन समिति की ओर से उपलब्ध कराए गए होटल में ही ठहरेंगे। हालांकि यह होटल पांच सितारा श्रेणी का नहीं है, लेकिन बोर्ड का कहना है कि खिलाड़ियों के आराम और जरूरतों को ध्यान में रखते हुए पर्याप्त व्यवस्था की गई है।

कमरों की तस्वीरों से शुरू हुआ था विवाद

होटल को लेकर विवाद तब शुरू हुआ, जब सामाजिक माध्यमों पर कुछ तस्वीरें सामने आईं। इनमें खिलाड़ियों के लिए दो लोगों के साझा इस्तेमाल वाले कमरे दिखाई दे रहे थे। कमरों में दो अलग-अलग बिस्तर नजर आने के बाद सवाल उठने लगे कि क्या क्रिकेटरों के लिए ऐसी व्यवस्था पर्याप्त होगी। क्रिकेट खिलाड़ियों के साथ बड़े किट बैग, कपड़े और अन्य जरूरी सामान भी रहता है। ऐसे में कमरों की जगह और सुविधाओं को लेकर चिंता जताई गई। हालांकि बीसीसीआई ने साफ कर दिया है कि भारतीय क्रिकेटरों को उन तस्वीरों में दिखाए गए साझा कमरों में नहीं रखा जाएगा।

20 सितंबर को जापान रवाना होगी टीम

भारतीय पुरुष क्रकेट टीम 20 सितंबर को एशियाई खेलों के लिए जापान रवाना होगी। इसके बाद 22 सितंबर को उसका सामना मेजबान जापान से होगा। इस तरह होटल से लेकर मैदान तक उठे सवालों पर बीसीसीआई ने अपनी स्थिति साफ कर दी है। बोर्ड के मुताबिक खिलाड़ियों को भले ही पांच सितारा होटल नहीं मिलेगा, लेकिन उनके ठहरने और खेलने के लिए जरूरी सुविधाओं का पर्याप्त इंतजाम किया गया है।

खिलाड़ियों के लिए अलग कमरे

राजीव शुक्ला ने भारतीय दल के विदाई समारोह के दौरान बताया कि भारतीय खिलाड़ियों के लिए अलग-अलग कमरों की व्यवस्था की गई है। उनके मुताबिक, बोर्ड आवास की व्यवस्था पर लगातार नजर रख रहा है और खिलाड़ियों की सुविधा को प्राथमिकता दी जा रही है। यह इंतजाम भारतीय ओलंपिक संघ, एशियाई खेल आयोजन समिति और जापान क्रिकेट संघ के बीच तालमेल से किया गया है। शुक्ला ने स्पष्ट किया कि होटल भले ही पांच सितारा नहीं हो, लेकिन खिलाड़ियों के लिए व्यवस्था अच्छी और आरामदायक है।

टोक्यो या ओसाका में ठहराना क्यों पड़ा भारी

शुरुआत में यह विकल्प भी सामने आया था कि भारतीय टीम को टोक्यो या ओसाका में ठहराया जाए। लेकिन नागोया से इन शहरों की दूरी और रोजाना आने-जाने की परेशानी को देखते हुए यह विकल्प व्यावहारिक नहीं माना गया। शुक्ला के अनुसार, नागोया में सीमित संख्या में होटल उपलब्ध हैं। टोक्यो से तेज गति वाली रेलगाड़ी के जरिए नागोया पहुंचने में करीब डेढ़ घंटे लगते हैं, जबकि ओसाका से भी काफी समय लगता है। ऐसे में टीम को प्रतियोगिता स्थल के आसपास ही ठहराना बेहतर समझा गया।

मैदान और ड्रेसिंग रूम पर थी असली नजर

शुक्ला ने बताया कि भारतीय टीम के लिए सबसे बड़ी चिंता होटल नहीं, बल्कि क्रिकेट मैदान, पिच और ड्रेसिंग रूम की सुविधाओं को लेकर थी। इन व्यवस्थाओं को लेकर भारत और पाकिस्तान की ओर से भी सवाल उठने की चर्चा सामने आई थी। इसी को देखते हुए एशियाई क्रिकेट परिषद की टीम ने जापान जाकर मैदान, पिच, ड्रेसिंग रूम और दूसरी सुविधाओं का निरीक्षण किया। निरीक्षण के बाद टीम ने व्यवस्थाओं को संतोषजनक माना।

चार दिन पुरानी बात का हिसाब चुकता!

वैभव सूर्यवंशी ने तिलक वर्मा को उन्हीं के अंदाज में दिया जवाब

नई दिल्ली, एजेंसी

दलीप ट्रॉफी फाइनल में ईस्ट जोन और साउथ जोन के बीच मुकाबला भले ही बल्ले और गेंद के बीच चल रहा हो, लेकिन चैथे दिन मैदान पर एक ऐसा पल देखने को मिला, जिसने मैच की पुरानी कहानी फिर याद दिला दी। ईस्ट जोन के उपकप्तान वैभव सूर्यवंशी ने साउथ जोन के कप्तान तिलक वर्मा के पास जाकर कुछ कहा। खास बात यह रही कि चार दिन पहले तिलक भी वैभव से इसी तरह बातचीत करते नजर आए थे। चैथे दिन साउथ जोन की स्थिति बेहद खराब थी। ईस्ट जोन के 708 रन के विशाल स्कोर के सामने साउथ की पारी लड़खड़ा चुकी थी और आठ विकेट गिर चुके थे। तिलक वर्मा एक छोर पर टिके हुए टीम की पारी को संभालने की कोशिश कर रहे थे। इसी दौरान वैभव उनके पास पहुंचे। दोनों के बीच कुछ बातचीत हुई। वैभव ने अपनी बात कही और फिर बिना किसी अतिरिक्त प्रतिक्रिया के वापस अपनी जगह लौट गए।

पहले तिलक ने की थी पहल

फाइनल के शुरुआती दिन ईस्ट जोन के बल्लेबाजों ने साउथ जोन के गेंदबाजों पर दबाव बना दिया था। इसी दौरान तिलक वर्मा युवा वैभव सूर्यवंशी के पास पहुंचे थे और दोनों के बीच कुछ शब्दों का आदान-प्रदान हुआ था। उस समय ऐसा लगा था कि तिलक युवा बल्लेबाज पर दबाव बनाने की कोशिश कर रहे हैं। चार दिन बाद हालात पूरी तरह बदल चुके थे। मुकाबला ईस्ट जोन की पकड़ में था और तिलक अपनी टीम को संकट से निकालने के लिए संघर्ष कर रहे थे। ऐसे में वैभव का उनके पास पहुंचना उसी पुराने घटनाक्रम का जवाब माना गया।

महिला एशिया कप: बांग्लादेश के खिलाफ अजेय भारत की आज होगी अग्निपरीक्षा

सेमीफाइनल में स्मृति-शेफाली पर बड़ी जिम्मेदारी

नई दिल्ली। महिला एशिया कप के पहले सेमीफाइनल में आज भारत और बांग्लादेश आमने-सामने होंगे। दुबई में रात 8 बजे शुरू होने वाले मुकाबले में भारतीय टीम जीत के साथ फाइनल का टिकट पक्का करने उतरेगी। भारत का पलड़ा आंकड़ों और मौजूदा फॉर्म दोनों में भारी है। टीम टूर्नामेंट में अब तक अजेय है, जबकि बांग्लादेश के खिलाफ पिछले 8 महिला टी-20 अंतरराष्ट्रीय मुकाबलों में भारत को हार नहीं मिली है।

भारत का पलड़ा भारी

भारत और बांग्लादेश के बीच अब तक 24 अंतरराष्ट्रीय मुकाबले खेले गए हैं। इनमें भारतीय टीम ने 21 मैचों में जीत दर्ज की है। बांग्लादेश ने आखिरी बार 13 जुलाई 2023 को भारत को शिकस्त दी थी। इसके बाद से भारतीय टीम ने लगातार दबदबा बनाए रखा है। ऐसे में सेमीफाइनल में बांग्लादेश के सामने इस सिलसिले को तोड़ने की बड़ी चुनौती होगी। भारत ने ग्रुप-ए में तीनों मुकाबले जीतकर 6 अंकों के साथ शीर्ष स्थान हासिल किया। टीम ने थाईलैंड को 94 रन, हांगकांग को 137 रन और पाकिस्तान को 7 विकेट से हराया। दूसरी ओर बांग्लादेश ग्रुप-बी में 4 अंकों के साथ दूसरे स्थान पर रहा। उसने इंडोनेशिया और संयुक्त अरब अमीरात को हराया, जबकि श्रीलंका के खिलाफ 4 विकेट से हार झेलनी पड़ी।

मनोरंजन | **बॉलीवुड का कोना**

ठीक हूं..., 2 साल बाद बोलीं सिंगर अलका याग्निक, हालत देख टूटा फैन्स का दिल

बॉलीवुड की मशहूर सिंगर अलका याग्निक पिछले दो साल से स्पॉटलाइट से दूर हैं। वो एक दुर्लभ सुनने की बीमारी (सेंसरीन्यूरल नर्व हियरिंग लॉस) से जूझ रही हैं। 23 जून 2026 को अलका याग्निक को पद्म भूषण से सम्मानित किया गया। इस मौके पर वो व्हीलचेयर पर बैठी दिखीं। सिंगर को व्हीलचेयर पर देख कर उनके चाहने वालों का दिल टूट गया। दो साल तक लाइमलाइट से दूर रहने के बाद पहली वो कैमरे पर आईं और उन्होंने अपने दिल की ढेर सारी बातें शेयर कीं।

सेंसरीन्यूरल नर्व हियरिंग लॉस होने के बाद अलका याग्निक शोबिज की दुनिया से दूर हो गई थीं। उन्हें सुनने के लिए फैन्स के कान तरस रहे थे। डीडी न्यूज संग बातचीत में उन्होंने कहा कि पद्म भूषण का सम्मान मेरे लिए बहुत मयाने रखता है। सरकार की ओर से किसी कलाकार की तारीफ की जाए, जो वो बात ही अलग होती है। मैंने कभी नहीं सोचा था कि मुझे ये अवॉर्ड मिलेगा।

इसके बाद उनसे आपका हर फैन जानना चाहता है कि आप कैसी हैं। उन्होंने कहा कि मैं ठीक हूं। अपने फैन्स के लिए आज मैं कैमरे के सामने हूं। मुझे बहुत सारे मैसेज आए हैं और सभी बहुत ज्यादा खुश हैं। बार-बार सभी बहुत मुबारकबाद दे रहे हैं। अलका याग्निक ने बताया कि उनकी मम्मी की वजह से वो सिंगिंग में आईं। उनकी मां को लगा कि इसमें खास बात है और वो कुछ कर सकती हैं।

इमोशनल हुए फैन्स

अलका याग्निक का इंटरव्यू सुनकर फैन्स इमोशनल हो गए। वो 2 साल बाद कैमरे पर बोल रही हैं, लेकिन उनमें पहले जैसा कॉन्फिडेंस नहीं नजर आया। वो रुक-रुक कर बोलती दिखीं। उन्हें देखकर साफ पता चल रहा है कि वो अभी पूरी तरह ठीक नहीं हैं। उन्हें पूरी तरह रिकवर होने में अभी थोड़ा समय है। एक फैन ने उनके वीडियो पर लिखा कि दिल टूट गया। दूसरे ने लिखा कि अपनी फेवरेट सिंगर को ऐसे देखकर अच्छा नहीं लग रहा है।

प्रीति जिंटा ने 28 साल के सफर को किया याद, बोलीं- कलाकार पर अच्छा काम देने का दबाव आज भी वैसा

मुंबई। हिंदी सिनेमा ने पिछले तीन दशकों में तकनीक, कहानी और फिल्म निर्माण के स्तर पर लंबा सफर तय किया है। अभिनेत्री प्रीति जिंटा इस बदलाव की प्रत्यक्ष गवाह रही हैं। 90 के दशक के अंतिम वर्षों में फिल्मी दुनिया में कदम रखने वाली प्रीति ने उस दौर से लेकर आज तक सिनेमा को कई रूप बदलते देखा है। उनके मुताबिक, शूटिंग की तकनीक और फिल्मों की कहानियां भले ही काफी बदल गई हों, लेकिन कलाकारों पर बेहतर प्रदर्शन देने का दबाव आज भी पहले जैसा ही है।

प्रीति जिंटा ने अपने शुरुआती दिनों को याद करते हुए कहा कि वह खुद को भाग्यशाली मानती हैं कि उन्हें ऐसे समय में हिंदी फिल्मों में प्रवेश करने का अवसर मिला, जब सिनेमा बदलाव के दौर में प्रवेश कर रहा था। फिल्म 'क्या कहना' उनके लिए खास रही। उस समय के लिहाज से फिल्म की कहानी काफी अलग थी और नई अभिनेत्री के तौर पर उसमें काम करना उनके लिए महत्वपूर्ण अनुभव था। हालांकि, प्रीति के मुताबिक, उनके आने से पहले भी हिंदी सिनेमा में ऐसी विषयवस्तु पर फिल्में बन चुकी थीं।

'दिल चाहता है' ने बदली फिल्म बनाने की शैली

प्रीति ने कहा कि इसके बाद 'दिल चाहता है' जैसी फिल्मों ने फिल्म निर्माण के तौर-तरीकों में बड़ा बदलाव दिखाया। इसमें संवादों को सीधे शूटिंग के दौरान रिकॉर्ड करने की तकनीक का इस्तेमाल हुआ, जिससे कलाकारों को बाद में आवाज रिकॉर्ड करने की जरूरत कम हुई। उनके अनुसार, वह खुद उस संक्रमणकाल का हिस्सा थीं, जब हिंदी फिल्मों में पुरानी कार्यशैली धीरे-धीरे आधुनिक तकनीक की ओर बढ़ रही थी।

मेट्रो बाजार

लागत लाभ के दम पर भारत आरएंडडी क्षेत्र में 12 लाख करोड़ के अवसर हासिल करने में सक्षम

नई दिल्ली । केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल ने बुधवार को कहा कि भारत अपने लागत लाभ का फायदा उठाकर रिसर्च एंड डेवलपमेंट (आरएंडडी) के क्षेत्र में करीब 12 लाख करोड़ रुपए के बड़े अवसर हासिल कर सकता है। इसके लिए सरकारी समर्थन को उद्योग और शैक्षणिक संस्थानों की क्षमताओं के साथ जोड़ने की जरूरत है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर गोयल ने कहा कि भारत में शोध की लागत स्विट्जरलैंड या यूरोप की तुलना में करीब पांचवें या छठे हिस्से के बराबर हो सकती है। यह लागत लाभ भारत को वैश्विक इनोवेशन हब बनाने की दिशा में बड़ा अवसर प्रदान करता है।

उन्होंने कहा कि अगर सरकार करीब 1 लाख करोड़ रुपए के निवेश के साथ आरएंडडी कार्यक्रम शुरू करती है और उद्योग जगत भी इसमें बराबर का योगदान देता है, तो भारत अपने मेडिकल कॉलेजों, आईआईटी और अन्य उत्कृष्टता केंद्रों की क्षमताओं का इस्तेमाल करके 10-12 लाख करोड़ रुपए तक का शोध कार्य कर सकता है।

गोयल ने 'एक्स' पर साझा किए गए एक वीडियो में कहा, ÷अगर उद्योग बराबर का योगदान देता है और हम अपने अकादमिक संस्थानों का इस्तेमाल करते हैं, तो हम वास्तव में 10-12 लाख करोड़ रुपए का रिसर्च एंड डेवलपमेंट कर सकते हैं।÷ उन्होंने भारत में उत्पाद डिजाइन, क्लीनिकल ट्रायल और चिकित्सा उपकरणों के निर्माण जैसे क्षेत्रों में मौजूद संभावनाओं का भी जिक्र किया।

युद्ध का फायदा उठा रहा अमेरिका: भारत का एलपीजी आयात छह माह में 281 फीसदी बढ़ा

नई दिल्ली। पश्चिम एशिया में युद्ध और स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के रास्ते ऊर्जा आपूर्ति बाधित होने का असर अब भारत के रसोई गैस बाजार पर साफ दिखाई दे रहा है। पिछले छह महीनों में भारत के एलपीजी आयात का नक्शा ही बदल गया है। जो अमेरिका कुछ महीने पहले भारत की एलपीजी जरूरत का छोटा हिस्सा पूरा करता था, वह अब सबसे बड़ा करीब तीन गुना बढ़ा आपूर्तिकर्ता बन गया है। मार्च से अगस्त 2026 के बीच भारत के कुल एलपीजी आयात में अमेरिका की हिस्सेदारी बढ़कर 53 फीसदी हो गई। सितंबर 2025 से फरवरी 2026 के दौरान यह सिर्फ 7.9 फीसदी थी। %यानी छह महीने में अमेरिकी हिस्सेदारी करीब सात गुना हो गई।

असली वजह है होर्मुज: भारत की एलपीजी जरूरत का ई करीब 60 फीसदी हिस्सा आयात से पूरा होता है। सामान्य स्थिति में भारत के करीब 90 फीसदी एलपीजी आयात पश्चिम एशिया से स्ट्रेट ऑफ होर्मुज के रास्ते आते हैं। युद्ध के कारण इस अहम समुद्री मार्ग पर जहाजों की आवाजाही प्रभावित हुई और भारत को वैकल्पिक स्रोत तलाशने पड़े।

अमेरिका से आयात करीब तीन गुना बढ़ा: केप्लर के शिपिंग आंकड़ों के मुताबिक, मार्च-अगस्त में भारत ने कुल 71.4 लाख टन एलपीजी आयात की। यह पिछले छह महीनों के मुकाबले 43.1 फीसदी कम है। इसके उलट अमेरिका से आयात 281.1 फीसदी बढ़कर 37.8 लाख टन पहुंच गया। यानी कुल आयात घटने के बावजूद अमेरिका से आने वाली गैस तेजी से बढ़ी।

खाड़ी देशों की पकड़ कमजोर हुई: युद्ध से पहले भारत के एलपीजी आयात में यूएई सबसे बड़ा स्रोत था । सितंबर-फरवरी में उसकी हिस्सेदारी 37.8 फीसदी थी, जो मार्च-अगस्त में घटकर 13.4 फीसदी रह गई।

बिहार : 14 जिलों में बाढ़, 40 लाख लोग प्रभावित यूपी में रामगंगा नदी में मंदिर समाया

पटना. एजेंसी। बिहार में लगातार पांच दिनों से हो रही बारिश के कारण 14 जिलों में बाढ़ की स्थिति बनी हुई है। 40 लाख से ज्यादा लोग प्रभावित हैं। इनमें सबसे ज्यादा पटना, भोजपुर, सारण, वैशाली, भागलपुर और बेगूसराय के लोग हैं। मौसम विभाग के मुताबिक, सितंबर में अब तक बिहार में 83.6 मिमी बारिश हुई है। यह सामान्य से 24% ज्यादा है। भागलपुर के सुल्तानगंज में गंगा का पानी 36.78 मीटर तक पहुंच गया है। यह 2021 में दर्ज 36.75 मीटर के सबसे ऊंचे स्तर से भी ज्यादा है। यहां तिलकामांझी यूनिवर्सिटी में गंगा का पानी घुस गया है। टीचर्स और स्टूडेंट्स आने-जाने के लिए नाव का सहारा ले रहे हैं। इधर, यूपी के 26 जिले बाढ़ की चपेट में हैं और करीब 4 लाख लोग प्रभावित हैं। लगातार बारिश से नदियां उफान पर हैं। बरेली में प्राचीन मंदिर रामगंगा नदी में समा गया, जबकि बाराबंकी में सरयू के पानी में करीब 12 मकान डूब गए। फर्रुखाबाद में 10 दिन में 15 मकान गंगा में समा चुके हैं। वहीं, एमपी और राजस्थान में फिलहाल बारिश का दौर थमा हुआ है। एमपी में अगले 3 दिन तेज बारिश की संभावना नहीं है। राजस्थान में 11 सितंबर से बारिश शुरू होने का अनुमान है। बुधवार को यहां 10 शहरों में तापमान 35 डिग्री से ऊपर रहा।

न्यूज विंडो

फिलीपींस : नाव में लगी आग से 5 यात्रियों की मौत

मनीला. एजेंसी। फिलीपींस में बुधवार देर रात को एक यात्री फेरी में अचानक आग लग गई। हादसा देश के पश्चिमी हिस्से में समुद्र में हुआ। आग लगने के बाद बड़ी संख्या में लोग लापता हो गए। फिलीपींस कोस्ट गार्ड के मुताबिक, हादसे में अब तक कम से कम पांच लोगों की मौत हो चुकी है, जबकि 42 लोगों को सुरक्षित बचाया गया है। बचाव अभियान अभी जारी है, इसलिए लापता लोगों की संख्या आगे बदल सकती है। फिलीपींस कोस्ट गार्ड की प्रवक्ता कमोडोर नोएमी कायाबायब ने बताया कि फेरी पर कुल 134 लोग सवार थे। इनमें 117 यात्री और 17 चालक दल के सदस्य शामिल थे।

अमेरिका: भारतीय दंपती ने कॉलेज को दिए 191 करोड़

वॉशिंगटन. एजेंसी। भारतीय मूल के एक दंपती ने टेक्सास में अपनी पुरानी यूनिवर्सिटी अल्मा मेटर को 20 मिलियन डॉलर का दान दिया है। इससे संस्थान में आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और एडवांस्ड एनालिटिक्स की पढ़ाई को बढ़ावा मिलेगा और 'अमेरिकन ड्रीम' को साकार करने में अप्रवासियों के योगदान को भी रेखांकित किया जाएगा। एक प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, अनुराधा और विकास सिन्हा ने यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास को 20 मिलियन डॉलर यानी कि भारतीय रुपयों में 191 करोड़ से ज्यादा का दान दिया है। इस तोहफे के सम्मान में, यूनिवर्सिटी ऑफ नॉर्थ टेक्सास 'अनुराधा और विकास सिन्हा कॉलेज ऑफ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस एंड एडवांस्ड एनालिटिक्स' की स्थापना करेगा। यह कॉलेज आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस, इंटेलिजेंट सिस्टम और डेटा एनालिटिक्स पर केंद्रित एक एकेडमिक और रिसर्च हब के तौर पर काम करेगा।

खंभे से टकराया कैंटर, ड्राइवर 200 बकरियां जिंदा जलीं

हैदराबाद. एजेंसी। तेलंगाना के महबूबनगर जिले में गुरुवार तड़के जानवरों को ले जा रहा कैंटर बिजली के खंभे से टकरा गया। गाड़ी के खंभे से टकराने के साथ ही उसमें आग लग गई। इस हादसे में ड्राइवर की मौत हो गई और करीब 200 बकरियां जलकर मर गईं। फायर विभाग के एक अधिकारी के मुताबिक, यह घटना नेशनल हाईवे-44 पर बूथुर गांव के पास सुबह करीब 4 बजे हुई। कैंटर पूरी तरह आग की चपेट में आ गया। अधिकारी ने बताया कि सामान भरकर ले जा रहा कैंटर, जिसमें करीब 150-200 बकरियां थीं, वो बिजली के खंभे से टकरा गई। माना जा रहा है कि खंभे से टकराने के बाद गाड़ी का डीजल टैंक फट गया और चिंगारी से भीषण आग लग गई।

दक्षिण एशिया में अगस्त-अक्टूबर के दौरान हीटस्ट्रोक समेत कई बीमारियों का खतरा

अल नीनो से भारत पर बढ़ा हेल्थ रिस्क, डेंगू-मलेरिया के बीच डब्ल्यूएचओ की चेतावनी

नई दिल्ली। एजेंसी

देश के कई हिस्सों में डेंगू के मामले बढ़ रहे हैं। इसी बीच विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लयूएचओ) के एक आकलन में भारत को उन देशों में शामिल किया गया है, जहां सेहत से जुड़े बड़े या बहुत बड़े जोखिम हैं और इसका कारण एल नीनो है क्योंकि इसके असर से पूरे दक्षिण एशिया में मौसम का मिजाज बदल रहा है। अल नीनो मध्य और पूर्वी ट्रॉपिकल प्रशांत महासागर में सतह के पानी का समय-समय पर गर्म होना है, जो दुनिया भर में मौसम के पैटर्न को बिगाड़ सकता है और प्रशांत क्षेत्र से बहुत दूर बारिश और तापमान को प्रभावित कर सकता है।

रिपोर्ट में भारत सबसे ज्यादा जोखिम वाले देशों में

स्वास्थ्य संगठन की ग्लोबल पब्लिक हेल्थ सिचुएशन एनालिसिस अल नीनो 2026 रिपोर्ट 5 सितंबर को जारी हुई। इसमें भारत को ज्यादा या बहुत ज्यादा जोखिम वाले देशों में रखा गया है। रिपोर्ट के अनुसार, अगस्त-अक्टूबर के दौरान दक्षिण एशिया के ज्यादातर हिस्सों में सामान्य से कम बारिश और सामान्य से ज्यादा गर्मी होने की आशंका है।

भारत में बढ़ रही बीमारियां

यह चेतावनी ऐसे समय में आई है जब देश के कुछ हिस्सों में पहले से ही वेक्टर-जनित (कीड़ों-मकोड़ों से फैलने वाली) बीमारियां बढ़ रही हैं। दिल्ली में अगस्त में डेंगू के 90 मामले सामने आए, जो इस साल किसी एक महीने में सबसे ज्यादा हैं। इसके साथ ही 29 अगस्त तक कुल मामलों की संख्या 311 हो गई। दिल्ली नगर निगम के अनुसार, मलेरिया के मामले भी जुलाई में 17 से बढ़कर अगस्त में 53 हो गए, जिससे इस साल कुल मामलों की संख्या 119 हो गई। एजेंसी डेंगू या मलेरिया के मौजूदा मामलों को सीधे तौर पर अल नीनो से नहीं जोड़ती बल्कि इसे जोखिम को बदलने वाला कारक (रिस्क मॉडिफायर) मानती है, जिसके असर स्थानीय मौसम, जोखिम की स्थिति और स्वास्थ्य-व्यवस्था की क्षमता पर निर्भर करते हैं।

भारत के लिए चिंता का विषय

भारत के लिए गर्मी एक बड़ी चिंता का विषय है। ज्यादा तापमान से हीट एग्जॉशन (गर्मी से थकान) और हीटस्ट्रोक हो सकता है। साथ ही दिल, सांस, किडनी और मेटाबॉलिज्म से जुड़ी बीमारियां और बिगड़ सकती हैं। बहुत ज्यादा गर्मी का असर मां और नवजात शिशु की सेहत पर भी पड़ सकता है। कुपोषण, भोजन की कमी और गैर-संक्रामक बीमारियों का बिगड़ना भी चिंता की बात है। बारिश और पानी की उपलब्धता में बदलाव से अनाज के उत्पादन पर असर पड़ सकता है, जबकि भारी बारिश और बाढ़ से लेप्टोस्पायरोसिस का खतरा बढ़ सकता है। खासकर उन जगहों पर जहां साफ-सफाई और जल निकासी की व्यवस्था खराब है। डब्लयूएचओ ने भारत-नेपाल और भारत-भूटान सीमाओं की ओर भी ध्यान दिलाया है, जहां लोगों के विस्थापन से सीमा पार बीमारियों के फैलने का खतरा बढ़ सकता है।

113 करोड़ का क्रिप्टो घोटाला

वित्त मंत्रालय का अधिकारी बनकर ठगी करने वाला अमित यूएई में गिरफ्तार

ठाणे। एजेंसी

क्रिप्टोकरंसी के नाम पर निवेशकों से 113 करोड़ रुपये की भारी-भरकम ठगी करने वाले एक बड़े आरोपी को संयुक्त अरब अमीरात (यूएई) में गिरफ्तार कर लिया गया है। आरोपी की पहचान अमित लखनपाल के रूप में हुई है, जो खुद को वित्त मंत्रालय का अधिकारी बताकर लोगों को अपने जाल में फंसाता था। ठाणे पुलिस के अनुरोध पर जारी किए गए रेड कॉर्नर नोटिस के आधार पर यूएई प्रशासन ने यह कार्रवाई की है।

ईडी की सूचना पर हुई गिरफ्तारी

प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) ने अमित लखनपाल के छुपने की पुख्ता जानकारी संबंधित अधिकारियों के साथ साझा की थी। इसके बाद 1 सितंबर को उसे यूएई में धर दबोचा गया। गिरफ्तारी के बाद, भारत सरकार ने उसे वापस भारत लाने की प्रक्रिया शुरू कर दी है। साथ ही जांच एजेंसियों को मामले से जुड़े सभी दस्तावेज व डिटेल तैयार रखने को कहा है। ठाणे पुलिस इस पूरे घोटाले की मुख्य जांच कर रही है, जबकि ईडी मनी लॉन्ड्रिंग (धोखाधड़ी के पैसों को ठिकाने लगाने) के एंगल से इसकी जांच में जुटी है। गौरतलब है कि जांच में सामने आया है कि अमित लखनपाल ने 'मनी ट्रेड कॉइन' नाम से एक फर्जी क्रिप्टोकरेंसी लॉन्च की थी। निवेशकों को अपने झांसे में लेने के लिए वह बड़े-बड़े पांच-तारा होटलों में शानदार कार्यक्रम आयोजित करता था और झूठे दावे करता था।

ब्रिक्स शिखर सम्मेलन

भारत दौरे पर आ सकते हैं चीनी राष्ट्रपति जिनपिंग

नई दिल्ली। एजेंसी

साल 2020 में गलवान घाटी में भारत और चीनी सैनिकों के बीच हुई खूनी झड़प के बाद अब पहली बार प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग के बीच एक औपचारिक द्विपक्षीय बैठक हो सकती है।

मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक, शी जिनपिंग नई दिल्ली में आयोजित होने जा रहे 18वें ब्रिक्स शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने शनिवार को भारत आ सकते हैं। इस दौरे पर पूरी दुनिया की नजरें टिकी हुई हैं। भारत इस बार 12 और 13 सितंबर को दिल्ली में 18वें ब्रिक्स सम्मेलन की मेजबानी कर रहा है। इसी सिलसिले में चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भारत सकते हैं। अगर जिनपिंग नई दिल्ली आते हैं तो यह 2020 के सीमा विवाद और गलवान झड़प के बाद उनका पहला भारत दौरा होगा। हालांकि, दोनों देशों के विदेश मंत्रालयों ने अभी तक इस द्विपक्षीय बैठक की आधिकारिक पुष्टि नहीं की है।

छत्तीसगढ़ के डौंडीलोहारा कॉलेज में हंगामा छात्र बोले- सुविधाएं दो या प्राचार्य हटाओ

डौंडीलोहारा। एजेंसी

बालोद जिले के शासकीय एकलव्य महाविद्यालय डौंडीलोहारा में लंबे समय से चली आ रही मूलभूत सुविधाओं की समस्याओं और प्राचार्य के छात्रों को टीसी थमा देने के कथित धमकी को लिखाफ छात्र-छात्राओं का आक्रोश सड़क पर उतर आया। कॉलेज की व्यवस्थाओं से नाराज बड़ी संख्या में विद्यार्थियों और एबीवीपी कार्यकर्ताओं ने सुबह दल्लीराजहरा-राजनांदगांव मार्ग पर महाविद्यालय के सामने करीब 10 मिनट तक चक्काजाम कर दिया।

पुलिस के समझाने के बाद विद्यार्थियों

को सड़क से हटाया गया, लेकिन इसके बाद भी उनका विरोध समाप्त नहीं हुआ। छात्र-छात्राएं कॉलेज के मुख्य गेट के सामने धरने पर बैठ गए और प्राचार्य रोशन आरा को हटाने की मांग को लेकर शाम 5 बजे तक डटे रहे। इस दौरान प्राचार्य का पुतला भी दहन किया गया। तेज धूप के बावजूद विद्यार्थी अपनी मांगों को लेकर धरनास्थल पर बैठे रहे।

सूचना मिलने पर एसडीएम, तहसीलदार सहित पुलिस बल मौके पर पहुंचा और विद्यार्थियों से चर्चा कर आंदोलन समाप्त करने की समझाइश दी, लेकिन छात्र प्राचार्य को हटाने और कॉलेज की मूलभूत सुविधाओं में सुधार की मांग पर अड़े रहे। लंबी बातचीत और समझाइश के बाद प्रशासन की ओर से विद्यार्थियों को उनकी मांगों पर कार्रवाई का आश्वासन दिया गया इसके बाद विद्यार्थियों ने अपना आंदोलन समाप्त किया।

मेट्रो एंकर भगोड़ा कहे जाने पर माल्या ने कहा- बैंकों को लौटा चुके हैं 14 हजार करोड़ से ज्यादा

विजय माल्या बोले... 'कॉकरोच बन जाऊं, शायद जिंदगी बेहतर हो'

लंदन। एजेंसी

भगोड़े आर्थिक अपराधी घोषित किए जा चुके कारोबारी विजय माल्या ने एक बार फिर भारत सरकार पर अपने साथ अन्याय करने का आरोप लगाया है। लंदन में रह रहे माल्या ने सोशल मीडिया पर लगातार कई पोस्ट किए। उन्होंने कहा कि उन्हें अब भी अन्याय का सामना करना पड़ रहा है। इसी दौरान उन्होंने लिखा, 'जितने अन्याय मैंने झेले हैं और अब भी झेल रहा हूं, उसे देखते हुए सोचता हूं कि क्या मुझे कॉकरोच बन जाना चाहिए। शायद कॉकरोच की तरफ जिंदगी बेहतर हो।'

विजय माल्या ने प्रवर्तन निदेशालय यानी ईडी की ओर से बॉम्बे हाईकोर्ट में दाखिल एक हलफनामे का हवाला दिया। उनका दावा है कि ईडी ने इसमें स्वीकार किया था कि उनसे करीब 14,000 करोड़ से ज्यादा की रकम बरामद की गई और 2021 में यह रकम उन बैंकों को दी गई, जिनका पैसा उनके ऊपर

बकाया था। विजय माल्या ने कहा कि अगर लोगों को उनकी बात पर भरोसा नहीं है तो वे उनके बयान के बजाय ईडी के अदालत में दिए हलफनामे को देखें। उन्होंने लिखा कि हलफनामे में 2021 में बैंकों को 14,000 करोड़ से ज्यादा दिए जाने की बात कही गई है।

भारत लौटने पर दी सफाई

इससे पहले विजय माल्या ने कहा था कि वह भारत आने से इनकार करने वाले 'भगोड़े' नहीं हैं। उनका दावा है कि वह 1992 से ब्रिटेन के स्थायी निवासी हैं और फिलहाल कानूनी तौर पर ब्रिटेन छोड़ने से रोके गए हैं। उन्होंने कहा कि भारत सरकार की ओर से उनके खिलाफ की गई कार्रवाई के बाद यह पूरा मामला शुरू हुआ। विजय माल्या ने यह भी कहा कि बैंक को पैसा वापस किया जाना उनकी भारत में शारीरिक मौजूदगी पर निर्भर नहीं है।

माल्या ने उठाए सवाल

विजय माल्या ने अपनी पोस्ट में एक कथित अकाउंट स्टेटमेंट की तालिका भी साझा की और खुद को गलत तरीके से भगोड़ा बताए जाने का आरोप लगाया। उन्होंने सवाल किया कि क्या उन्हें अब भी उसी तरह पेश किया जाना चाहिए, जबकि उनके मुताबिक बैंकों का पैसा वापस किया जा चुका है। उन्होंने मीडिया कवरेज पर भी सवाल उठाते हुए कहा कि किसी पत्रकार की खबर की शुरुआत में ही उन्हें 'धोखाधड़ी करने वाला' या 'फ्रॉडस्टर' बताने के बजाय यह पूछा जाना चाहिए कि उन्हें अपना पैसा वापस कब मिलेगा।

अक्टूबर 2025 में वित्त राज्य मंत्री पंकज चौधरी ने लोकसभा में बताया था कि भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम, 2018 के तहत कुल 15 लोगों को भगोड़ा आर्थिक अपराधी घोषित किया गया है। इनमें विजय माल्या और नीरव मोदी समेत कई चर्चित नाम शामिल हैं। वहीं, फरवरी 2026 में बॉम्बे हाईकोर्ट ने माल्या को फटकार लगाते हुए कहा था कि वह जानबूझकर अदालत की कार्यवाही से बचते हुए समानता के आधार पर राहत की मांग नहीं कर सकते। शीर्ष अदालत ने उन्हें यह स्पष्ट करने का अंतिम मौका दिया था कि क्या वह भारत लौटने का इरादा रखते हैं। माल्या की याचिका भगोड़ा आर्थिक अपराधी अधिनियम और उन्हें भगोड़ा घोषित किए जाने को चुनौती देती है।

स्वामी,मुद्रक,प्रकाशक **राजेश सिरोठिया** द्वारा पी जी इंफ्रास्ट्रक्चर एंड सर्विसेज प्राइवेट लिमिटेड,करोंद-भानपुर बाइपास विलेज रासलाखेड़ी भोपाल से मुद्रित तथा ए-182 मनीषा मार्केट शाहपुरा भोपाल से प्रकाशित। **संपादक राजेश सिरोठिया** **स्थानीय संपादक अनिल शर्मा*** आर एन आई पंजीयन क्रमांक एमपी एचआईएन/2016/68849 (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार) **फोन :** 0755-7963564, 4917524